जनवरी-2024 | वर्ष : 07 | अंक : 10 | मूल्य : ₹25/- मात्र

इस अंक के साथ कैलेंडर भी है।

युगांतर प्रकृति

भारत के पूर्वी राज्यों का एकमात्र पर्यावरण मासिक

खतरे में गजराज

युगांतर प्रकृति

प्रकृति एवं पर्यावरण को समर्पित मासिक पत्रिका

प्रकृति, पर्यावरण, सामाजिक उत्थान, क्षमता संवर्धन शोध एवं विकास तथा राष्ट्रीय गौरव के लिए समर्पित संस्था

विज्ञापन दर

1. बैक पेज	1,00,000/-
2. इनसाइड कवर पेज	90,000/-
3. फुल पेज	75,000/-
4. हाफ पेज	50,000/-

सदस्यता शुल्क

1. वार्षिक	250/-
2. पंचवर्षीय	1,200/-
3. दस वर्षीय	2,400/-
4. आजीवन	5,000/-

भुगतान संबंधित निर्देश

भुगतान कृपया चेक/डीडी/आरटीजीएस द्वारा Nature Foundation के नाम से करे

Account Details
Nature Foundation
Account No. : 3611740792
Kotak Mahindra Bank
IFSC Code : KKBK0005631

विज्ञापन संबंधित निर्देश

कृपया अपना विज्ञापन पीडीएफ अथवा जेपीजी फॉर्मेट में yugantarprakriti@gmail.com ईमेल या डाक द्वारा युगांतर प्रकृति, सेंट्रल स्कूल के समीप, सिद्रोल, नामकुम, रांची - 834010 के पते पर भेजे.

विशेष सहयोग

'युगांतर प्रकृति' का प्रकाशन नेचर फाउंडेशन के द्वारा किया जाता है, जो प्रकृति एवं पर्यावरण को समर्पित एक गैर लाभकारी ट्रस्ट है. पत्रिका के सुगम प्रकाशन हेतु Nature Foundation के नाम चेक अथवा डीडी के माध्यम से यथासंभव आर्थिक सहयोग आमंत्रित है.

इस अंक में खास...

कवर स्टोरी

4 5 हाथियों की मौत

जिम्मेदार कौन?

27 पर्यावरण

उत्तर भारत में कड़ाके की ठंड क्यों?

देश में ठंड का कहर बढ़ने लगा है। खासकर उत्तर भारत के राज्यों में पारा तेजी से लुढ़क रहा है।

20 स्पेशल स्टोरी

ग्लोबल साउथ की प्राथमिकताओं से न हो समझौताः नरेंद्र मोदी

प्रधानमंत्री ने इस बात पर जोर दिया कि जैसे-जैसे राष्ट्र जलवायु कार्रवाई को आगे बढ़ाते हैं, यह समानता, जलवायु न्याय, साझा दायित्वों और साझा क्षमताओं पर आधारित होना चाहिए।

28 जेबरा दिवस

जेबरा के बारे में जान लें सबकुछ

24 मौसम

सर्दी और गर्मी में मौसम का तंत्र

मध्य एशिया के उच्च दबाव केंद्र से सतही हवाओं के परिणामस्वरूप शुष्क महाद्वीपीय वायु द्रव्यमान भारत में आता है ये महाद्वीपीय हवाएँ उत्तर-पूर्वी भारत में व्यापारिक हवाओं से टकराती हैं।

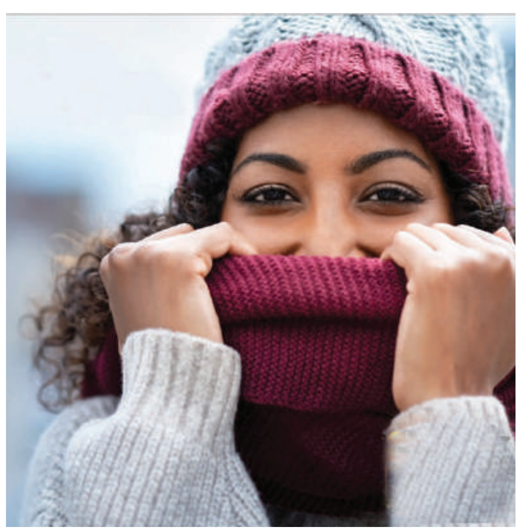

32 जरा हटके

मिलिए चिड़ियों की दुनिया के डॉन से

युगांतर प्रकृति

भारत के पूर्वी राज्यों का एकमात्र पर्यावरण मासिक

वर्ष-7, अंक-10, जनवरी-2024 कुल पृष्ठ-36 (आवरण सहित)

मुख्य संरक्षक
सरयू राय

प्रधान संपादक
आनंद सिंह

संपादक
अंशुल शरण

संरक्षक मंडल
राजेन्द्र सिंह, एम.सी. मेहता, प्रो. आर. के. सिन्हा,
प्रो. एस. इ. हसनैन, डॉ. आर. एन. शरण,
डॉ. आर. के. सिंह

सलाहकार मंडल
डॉ. एम. के. जमुआर, डॉ. दिनेश कुमार मिश्र,
डॉ. के. के. शर्मा, डॉ. गोपाल शर्मा,
डॉ. ज्योति प्रकाश

डिजाइन आर्टिस्ट
अनवारूल हक

विधि परामर्शी
रवि शंकर (अधिवक्ता)

प्रबंधन
राजेश कुमार सिन्हा

संपादकीय कार्यालय
संपादकीय, सदस्यता एवं विज्ञापन
नेचर फाउंडेशन, सेंट्रल स्कूल के समीप
पो. नामकूम, सिदरौल, रांची, झारखंड, पिन-834010

कोलकाता कार्यालय
ग्राउंड फ्लोर, 131/24, रीजेंट पार्क गवर्नमेंट क्वार्टर,
कोलकाता, पिन-700040

पटना कार्यालय
201, दीपराज कॉम्प्लेक्स, आर्य कुमार रोड,
दिनकर गोलंबर, पटना 834004

स्वामी, मुद्रक और प्रकाशक **मधु** द्वारा झारखंड प्रिंटर्स
प्रा. लि., 6A, गुरुनानक नगर, साकची, **जमशेदपुर** से
मुद्रित व नेचर फाउंडेशन, सेंट्रल स्कूल के समीप
पो. नामकूम, सिदरौल, **रांची**, झारखंड से प्रकाशित।

आरएनआई नंबर: JHAHIN/2016/68667

पोस्टल रजिस्ट्रेशन नंबर: RN/248/2016-18

■अपनी **बात**

नया साल और पर्यावरण

जरा सोच कर देखिए

साल का पहला दिन है और आप तुलसी के पौधे के साथ अपने पड़ोसी को भोरे-भोर हैप्पी न्यू ईयर कह रहे हों।

साल के पहले ही दिन आपने अपने घर में, आंगन में, लॉबी में गेंदा, गुलाब, चंपा, चमेली के पौधे लगा रखे हों और उसमें पानी-खाद डाल रहे हों।

साल के पहले ही दिन आपने पक्षियों को दाना-पानी देने का मन बना लिया हो।

साल के पहले ही दिन आप बाड़ी से खर-पतवार साफ कर शीशम, कटहल, नींबू, आम के पौधे लगा रहे हों।

कितना सुंदर होगा वह दृश्य...

नये साल का इससे बेहतर खैरमकदम और क्या किया जा सकता है।

सारी जिंदगी हम लोग मौसम को कोसते रहते हैं। ठंड में बाप-बाप करते हैं तो चिलचिलाती धूप में माई-माई। ठंड में हमें हीटर की बेसाख्ता जरूरत पड़ती है तो गर्मी में बिना एसी के हमारा दम निकलने लगता है। कभी हमने सोचा है कि ऐसा क्यों होता है। कभी सोच लेते तो यह दिन आता ही नहीं। फिर वही बात आएगी कि धरा को संभालिए। प्रकृति को संभालिए। वातावरण को अपने अनुकूल करने की चेष्टा मत कीजिए। खुद को वातावरण के अनुकूल कीजिए। लेकिन हम ठहरे इंसान। घमंडी। अहंकारी। एक मायने में महामूर्ख भी। नेचर अपने हिसाब से चलती है। आपको मौका देती है-सुधरने और संभलने का। आप समझ गये तो ठीक अन्यथा फिर नेचर अपने हिसाब से ही आपको समझा देती है। केदारनाथ का कहर, सुनामी जैसे डरावने दृश्य हमारे पास आते हैं तो हम नेचर से डर जाते हैं। बीतते वक्त के साथ हम अपनी बदमाशियां फिर से शुरू कर देते हैं। हम खामखाह नदियों को बांधने की जुर्रत करते हैं। या तो नदी मर जाएगी अन्यथा आपको अपने आगोश में ले लेगी...जिंदगी भर के लिए।

तो, नये साल का स्वागत कीजिए पर इस बार पर्यावरण पर ध्यान दीजिए।

लोगों को जागरूक कीजिए।

उन्हें अच्छे और बुरे का फर्क समझाइए।

वैसे भी अब वक्त बेहद कम है।

पर्यावरण के क्षेत्र में हमें-आपको मिल-जुल कर बहुत काम करना है।

नये वर्ष का पर्यावरणीय अभिनंदन कीजिए...

शुभ हो नव वर्ष!!

(अंशुल शरण)

बंदर कैसे पर्यावरण की मदद करते हैं

भला बंदर भी पर्यावरण की मदद कर सकते हैं। हां, यह संभव है। बंदर प्राकृतिक जीवन का हिस्सा होते हैं और वे पर्यावरण के साथ अपने साझे रहने के कई तरीके होते हैं।

बीज और पौधों का प्रसारण

बंदर अक्सर फल और पौधों के बीजों को खाते हैं और उनके बीजों को अलग-अलग स्थानों पर गिराते हैं, जिससे पौधों का नया पौधा उग सकता है। इससे जैव विविधता बढ़ती है और वनस्पतियों के प्रसारण में मदद मिलती है।

बीजों की प्रड़ोगेशन

बंदर भूमि के नीचे अपने खाए गए फलों और खाद्यान्न के अधिकांश बीज गर देते हैं, जिससे भूमि की पुनर्निर्माण होती है।

पौधों की प्रतिक्रिया

बंदर फल और पौधों के बीजों को खाते समय कुछ बीज उनके अगले पौधे की ओर बढ़ा सकते हैं, जिससे वनस्पतियों की संख्या बढ़ सकती है।

बुआई और फसल बचाव

कुछ क्षेत्रों में, बंदर फसलों को नुकसान पहुंचाते हैं, लेकिन वे फसल बचाने और बुआई के दौरान की जाने वाली कई कार्रवाईयों में मदद कर सकते हैं।

प्रजनन में मदद

बंदरों का प्रजनन भी प्राकृतिक जीवन की संरक्षण में मदद कर सकता है, क्योंकि यह उनके जीवन चक्र का हिस्सा है।

इसके अलावा, बंदरों के जीवन और स्वभाव को समझकर हम उनके साथ रह सकते हैं और उनके प्राकृतिक आवास को संरक्षित रख सकते हैं। इससे उनके जीवन को प्राकृतिक पर्यावरण के साथ मेल हो सकता है। ■

5 हाथियों की मौत

जिम्मेदार कौन?

झारखंड के पूर्वी सिंहभूम ज़िले के घाटशिला में 21 नवंबर को पांच हाथियों की मौत हो गई। ये हाथी मुसाबनी वन क्षेत्र के बेनाशोल उपरबांधा के यूकिलिप्टस के जंगल में 33 हज़ार वोल्ट की हाईटेंशन लाइन की चपेट में आ गए थे। इनमें दो हाथी के बच्चे भी शामिल हैं। यह 21 नवंबर की शाम 6 से 7 बजे के बीच हुआ था। हाथियों की मौत की सूचना ग्रामीणों ने वन विभाग को दी थी। बताया जा रहा है कि यह हादसा हिंदुस्तान कॉपर लिमिटेड के माइंस के लिए गए हाईटेंशन तार की चपेट में आने से हुआ। पानी और चारे की कमी के कारण हाथी भटककर आबादी वाले इलाकों में पहुंच रहे हैं। पिछले एक साल में चार हाथियों की मौत हो चुकी है। इस साल हाथियों के हमले में तीन लोगों की मौत हो चुकी है।

उच्चस्तरीय अध्ययन दल का होगा गठन

जमशेदपुर पूर्वी के विधायक सरयू राय ने इस संबंध में गत दिनों भारत सरकार के पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग के राज्यमंत्री अश्विनी चौबे से वार्ता की और फिर अपर महानिदेशक (वन्य जीव) विभाष रंजन से भी मिले। उनसे घाटशिला के उपर बांधा जंगल मे बिजली का करंट लगने से हुई 5 हाथियों की दर्दनाक मौत के साथ ही झारखंड राज्य में वनों एवं वन्य जीवों के संरक्षण, संवर्द्धन एवं परिवर्धन के विषय में गहन विमर्श किया और प्रासंगिक सूचनाएँ साझा किया। श्री राय की विभागीय मंत्री से वार्ता नहीं हो सकी। वह देश से बाहर थे।

■ युगांतर प्रकृति नेटवर्क

यहां जारी एक बयान में श्री राय ने बताया कि वन्यजीवों के अपर महानिदेशक से उन्होंने माँग की कि विगत 10 वर्षों में हाथी परियोजना, व्याघ्र परियोजना और अन्य मदों में भारत सरकार से झारखंड सरकार के वन विभाग की मिली सहायता राशि के उपयोग की जाँच कराएँ। इसके लिए एक उच्चस्तरीय अध्ययन दल गठित करें जिसमें विशेषज्ञों को शामिल करें, परंतु इस अध्ययन दल मे वन एवं पर्यावरण विभाग का कोई अधिकारी न रहे। अपर निदेशक वन्य जीव, भारत सरकार ने आश्वस्त किया कि वे इस मुद्दे की जाँच के लिए एक उच्चस्तरीय अध्ययन दल गठित करेंगे।

श्री राय ने उनका ध्यान बंगाल-झारखंड सीमा पर बंगाल सरकार द्वारा खाई खोदकर हाथियों के स्वाभाविक भ्रमण पथ को बाधित करने की ओर आकृष्ट किया और बताया कि यही रवैया झारखंड के विभिन्न ज़िला वन पदाधिकारी भी अपना रहे

सब कुछ भगवान भरोसे

- वनों की रक्षा के साथ-साथ वन्य जीवों की रक्षा करने, उनका अभिवर्द्धन करने के लिए भारत सरकार और झारखंड सरकार तथा विभिन्न राज्यों के द्वारा कई कानून बनाये गये हैं। स्पष्ट निर्देश दिया गया है कि प्रासंगिक संदर्भ में किसमें क्या करना है। ऊपर बाँधा जंगल के उस स्थान पर जहाँ हाथियों की मौत हुई है, ऐसा लगा कि नियम-कानून केवल कागजों तक हैं। इनका क्रियान्वयन शुन्य है। उदाहरण के लिए वन जीवों के स्थल एवं भ्रमण क्षेत्र में बिजली के तारों की ऊँचाई सतह से 9 मीटर से अधिक होनी चाहिए परंतु घटनास्थल पर वैसा नहीं दिखा। एक तो तार काफी नीचे है दूसरे पौधारक्षण के लिए खाई खोदकर ऊपर मिट्टी का टीला बना दिया गया है, जिससे सतह से तार की ऊँचाई कम हो गयी है। यह टीला कई कई वर्ष पहले बना है। इस और वन विभाग के अधिकारियों और कर्मियों का ध्यान नहीं गया जो हादसा का मुख्य कारण है।

- वन विभाग और बिजली विभाग हादसा का दोष एक दूसरे पर मढ़ रहे हैं और बचकाना ब्यान दे रहे हैं। झारखंड सरकार ने हाथियों के भ्रमण का पर्यवेक्षण सिस्टम 7-8 साल पहले विकसित हुआ है। वन विभाग को बताना चाहिए कि इस सिस्टम में समय समय पर कितनी जानकारियाँ डाली गयी हैं और कितने निर्देश दिए गए हैं, और क्या क्या कारवाई की गयी है?
- राज्य के मुख्यमंत्री, राज्य वन्य जीव बोर्ड के अध्यक्ष होते हैं। वन संरक्षण अधिनियम की कंडिका 8 के अनुसार वन्यजीव बोर्ड को वन्यजीवों पर संरक्षण के बारे में राज्य सरकार को सलाह देने का दायित्व है। इस बोर्ड ने विगत 10 वर्षों में वन्यजीवों के संरक्षण के लिए क्या क्या सलाह दिया है, यह बात सामने आनी चाहिए। सरयू राय के अनुसार, मेरी जानकारी के मुताबिक वन्यजीव बोर्ड की भूमिका वन क्षेत्रों में क्रियान्वयन और निर्माण की योजनाओं की स्वीकृति देने तक हो गयी है। इसका नतीजा है कि टूटोरियल फोरेस्ट क्षेत्रों और रिजर्व फोरेस्ट दोनों में ही वन जीव के अस्तित्व पर खतरा मंडरा रहा है।
- कुछ वर्ष पहले बंगाल सरकार ने अपनी सीमा पर गहरी खाई खोद दिया है, जिससे हाथियों के बंगाल क्षेत्र में भ्रमण बाधित हो गया है। हवा, पानी, पंक्षी, जानवर इन सबों के बारे में किसी राज्य या देश की सीमा नहीं होती है। राज्य सरकार को बताना चाहिए कि बंगाल सरकार द्वारा हाथियों के भ्रमण में बाधा उत्पन्न करने का कितना विरोध झारखंड सरकार ने किया है। भारत सरकार के प्रोजेक्ट एलीफेंट में किनी शिकायतें दर्ज करवायाी गयी है और इसका क्या फलाफल निकला है?
- मैं माँग करता हूँ कि इस विषय में भारत सरकार का पर्यावरण और वन विभाग तथा झारखंड और बंगाल के वन पर्यावरण विभाग के बीच मंत्री स्तर की वार्ता होनी चाहिए और बंगाल द्वारा हाथियों का भ्रमण बाधित करने की समस्या का समाधान करना चाहिए।
- वन विभाग के एक जिम्मेदार पदाधिकारी का बयान है कि वे अंडा खोल में मिर्चा डालकर और इसे जलाकर हाथियों को इस क्षेत्र से बाहर कर रहे हैं। विडंबना है कि एक डीएफओ के क्षेत्र से दूसरे डीएफओ के क्षेत्र में भगाना ही हाथियों का समस्या का समाधान मान लेगा तो हाथियों के प्राकृतिक स्थल और भ्रमण करने से हाथियों की स्वतंत्रता समाप्त हो जाएगी। यह समस्या का कतई समाधान नहीं है। भारत सरकार के एडीजी फारेस्ट (वन्यजीव), प्रोजेक्ट एलीफैंट के सामने इस हादसे का झारखंड सरकार के वन विभाग ने कोई प्रतिवेदन भेजा है तो भारत सरकार की संस्था को इसकी जाँच करनी चाहिए और इसके लिए एक सक्षम दल का जीवों के संरक्षण की जाँच करने के लिए भेजे।
- चूँकि बिजली की लाइन एचसीएल के लिए बनाई गयी है और यह 1980 में वनसंरक्षण अधिनियम बनने के बाद बनाये गये हैं, इसलिए इस पर अधिनियम के प्रावधान लागु नहीं होते। लेकिन, इस संदर्भ में केंद्रीय प्राधिकरण का निर्देश नहीं होना इस हादसे का मुख्य कारण है। इसका समाधान केवल दो ही है। पहलाः वन क्षेत्रों में बिजली के तारों को भूमिगत करना और दूसराः ऐसे बिजली के तारों को केबलिंग करना और खंबों पर इंसुलेटर लगाना। इस पर होने वाले भारी खर्च की व्यवस्था वन्य जीवों के संरक्षण के हित में झारखंड सरकार और भारत सरकार मिलकर करे।
- झारखंड सरकार का मुख्य उद्देश्य भारत सरकार के प्रोजेक्ट एलीफैंट के सामने अधिक से अधिक कार्ययोजना प्रस्तुत कर अधिक से अधिक फंड लेने का है। भारत सरकार के प्रोजेक्ट एलीफैंट के पास वैधानिक अधिकार नहीं है। इसलिए इस बारे में वन संरक्षण अधिनियम और वन्यजीव संरक्षण अधिनियम के अनुरूप कानूनी कारवाई की जानी चाहिए।
- घाटशिला में करंट लगने से पाँच हाथियों की मौत कुछ दिन पहले इसी क्षेत्र में दो हाथियों की मौत, गिरीडीह में एक हाथी की मौत ...ये ऐसी घटनाएं हैं जिसके लिए दोषियों को चिन्हित कर उनके विरूद्ध आईपीसी की सुसंगत धराओं के तहत मुकदमा दर्ज कर कारवाई होनी चाहिए। ■

हैं और हाथियों को अपने क्षेत्र से दूसरे के क्षेत्रों की ओर खदेड़ने में लगे हैं। वन विभाग के अधिकारी हाथियों को उनके ही पर्यावास में परेशान करने में लगे हैं। इस पर उन्होंने कहा कि ऐसे मामलों को दो राज्यों के बीच समन्वय बनाकर अथवा एक ही राज्य के भीतर विभिन्न क्षेत्राधिकारियों के बीच समन्वय बनाकर किया जा सकता है और इसके लिए राजनीतिक पहल की आवश्यकता है जिसे या तो राज्य करें या इसे केन्द्र की पहल पर अंतर्राज्यीय समन्वय बनाकर राज्यों के बीच सार्थक वार्ता से निपटाने की पहल की जाएगी।

श्री राय को अपर महानिदेशक ने बताया कि उपर बांधा जंगल में गत 21 नवम्बर को हुई मौत, इसके पूर्व चाकुलिया में हुई मौत और गिरडीह में हुई एक हाथी की मौत की जाँच की रिपोर्ट जाँच दल ने उन्हे अभीतक नही मिली है। जाँच रिपोर्ट आने पर वे इसका गहन विश्लेषण करेंगे और सभी पहलुओं पर विचार करेंगे। श्री राय ने उन्हें बताया कि हाल के वर्षों में झारखंड में वनों के स्वास्थ्य की गुणवत्ता मे काफ़ी गिरावट आई है। उपर बांधा जंगल तो पूरी तरह से अकाशिया के पेड़ों से भरा पड़ा है जो वनों की जैव विविधता पर प्रतिकुल प्रभाव डाल रहा है। अपर महानिदेशक श्री राय की बातों से सहमत हुए कि वनों से ऐसे विदेशी मूल के वृक्षों को चरणबद्ध रूप से ख़त्म करना ज़रूरी है, परंतु यह कार्य राज्य सरकार को करना है। केन्द्र की वित्तीय सहायता से राज्यों में चल रही नवीकरण योजनाओं की इस कोण से समीक्षा की जाएगी और वनीकरण कार्य में वृक्षों की संख्या की जगह उनकी गुणवत्ता पर ज़ोर दिया जाएगा।

सरयू राय ने पलामू टाइगर रिज़र्व और सारंडा सघन वन में वन्य जीवों के संरक्षण एवं संवर्धन की स्थिति की ओर अपर महानिदेशक का ध्यान खींचा और बताया कि विगत तीन वर्षो से सारंडा क्षेत्र मे लौह अयस्क खनन में कमी आने से वहाँ वनों के पुनर्नवीकरण और वन्यजीवों की स्थिति बेहतर हुई है। सारंडा क्षेत्र में सांभर और चौसिंघा जैसे वन्य जीव दिखाई पड़ने लगे हैं जिनका संरक्षण ज़रूरी है। इसके लिए विभिन्न औद्योगिक एवं आर्थिक गतिविधियों के साईट स्पेसिफ़िक (स्थल विशेष) योजनाओं से वन विभाग को मिलने वाले धन का उपयोग किस भाँति हो रहा है इसकी जाँच होनी चाहिए ताकि विभिन्न योजनाओं के विरूद्ध प्राप्त हो रहे धन का दुरूपयोग रोका जा सके। मैंने पलामू टाइगर रिज़र्व की गतिविधियों की जाँच कराने की माँग भी की। इस बारे में एक लिखित प्रतिवेदन मैं इन्हें सौंपूँगा ताकि जाँच के बिन्दु निर्धारित किये जा सकें। अपर निदेशक को सरयू राय ने स्पष्ट किया और वे सहमत भी हुए कि 5 हाथियों की मौत का कारण स्पष्ट है। यह मौत बिजली का करंट लगने से हुई है। इसमें बहुत जाँच की गुंजाइश नहीं है। इसकी जाँच में वन्यजीव अपराध नियंत्रण ब्युरो की भी कोई भूमिका नहीं है। इसकी सही जाँच उच्चस्तरीय बहुआयामी अध्ययन दल से ही संभव है। इस बारे में जंगल क्षेत्र से गुजर रहे बिजली के तारों की ऊँचाई बढ़ाना और बिजली तारों को या तो भूमिगत किया जाना या इनका इंसुलेटेड केबलिंग किया जाना ही एकमात्र उपाय है। इसके लिए केन्द्र और राज्य सरकारों को पर्याप्त धन आवंटित करना होगा। इस मामले मे जाँच तो बस इतना ही करना है कि बिजली विभाग और वन विभाग के अधिकारियों ने इस मामले मे अथवा वनों से संबंधित अन्य मामलों मे अपनी भूमिका का समुचित निर्वाह किया है/कर रहे है या नही? इस जाँच में वन्यजीव अपराध नियंत्रण ब्यूरो की कोई भूमिका नहीं है। ■

> "सरयू राय ने पलामू टाइगर रिज़र्व और सारंडा सघन वन में वन्य जीवों के संरक्षण एवं संवर्धन की स्थिति की ओर अपर महानिदेशक का ध्यान खींचा और बताया कि विगत तीन वर्षों से सारंडा क्षेत्र मे लौह अयस्क खनन में कमी आने से वहाँ वनों के पुनर्नवीकरण और वन्यजीवों की स्थिति बेहतर हुई है।"

5 साल में 462 इंसान 50 से ज्यादा हाथियों की भी मौत

गजराज यानी हाथी झारखंड का राजकीय पशु है, लेकिन इनका गुस्सा राज्य के लिए गंभीर चिंता का विषय बना हुआ है। ऐसा कोई हफ्ता नहीं गुजरता जब राज्य के किसी न किसी इलाके से हाथियों के हमले की खबर न आती हो। पर्यावरण मंत्रालय के आंकड़े भी इसकी तस्दीक करते हैं। मंत्रालय ने हाल में एक आरटीआई आवेदन के जवाब में बताया था कि कि झारखंड में 2017 से पांच वर्षों में हाथियों के हमले में 462 लोग मारे गए हैं। लेकिन यह संघर्ष एकतरफा नहीं है। इस दौरान तकरीबन 50 हाथियों की भी अलग-अलग वजहों से मौत हुई है। वन विभाग के आंकड़े के मुताबिक पांच साल में सिर्फ बिजली के करंट की चपेट में आने से 20 हाथी मारे गए। रेलवे ट्रैक पर ट्रेनों की चपेट में आने और तस्करों की वजह से भी हाथियों की मौत की घटनाएं हुई हैं।

■ शंभु नाथ चौधरी

फरवरी के दूसरे-तीसरे हफ्ते में मात्र 12 दिनों के अंदर हाथी के हमले में 16 लोगों की जान चली गई। वन विभाग ने इसके लिए झुंड से बिछड़े एक हाथी को जिम्मेदार माना। यह गुस्साया गजराज पांच जिलों हजारीबाग, रामगढ़, लोहरदगा, चतरा और रांची में घूम-घूम कर तबाही मचाता रहा। इसने फसलें रौंदी, एक दर्जन जगहों पर दीवारें गिराईं और कई पेड़ उखाड़ डाले। इस दौरान रास्ते में आए कम से कम 20 लोगों को रौंद डाला, जिनमें से 16 लोगों की मौत हो गई। आलम यह कि इसके खौफ से रांची के एसडीओ को इटकी प्रखंड और आसपास के इलाकों में धारा 144 के तहत निषेधाज्ञा लागू करनी पड़ी।

राज्य के तत्कालीन प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वन्य जीव) शशिकर सामंता ने बताया था कि वन संरक्षक की अध्यक्षता में चार मंडलों में वन अधिकारियों की एक समिति बनाई गई है, जो इस बात की जांच कर रही है कि झुंड से बिछड़ा एक हाथी अचानक इतना उग्र क्यों हो गया? दरअसल हाथियों के गुस्से की वजहें जानने के लिए पिछले तीन-चार दशकों में कई अध्ययन और शोध हुए हैं और इन सभी के निष्कर्ष में यह बात समान रूप से सामने आई है कि मानवीय गतिविधियों ने हाथियों के प्राकृतिक अधिवास और उनके आने-जाने के परंपरागत रास्तों यानी कॉरिडोर को लगातार डिस्टर्ब किया है।

वाइल्ड लाइफ ट्रस्ट ऑफ इंडिया (डब्ल्यूटीआई) ने साल 2017 में एक रिपोर्ट पेश की थी, जिसमें बताया गया था कि झारखंड, ओडिशा, छत्तीसगढ़ और दक्षिण पश्चिम बंगाल का 21 हजार वर्ग किलोमीटर इलाका हाथियों का आवास है। मानव-हाथी संघर्ष के चलते देशभर में जितने लोगों की जान जाती है उनमें से 45 फीसदी इसी इलाके से हैं। आधिकारिक आंकड़े के मुताबिक देश के जंगली हाथियों की कुल संख्या का 11 प्रतिशत हाथी झारखंड में हैं। हालांकि चिंता की

वाइल्ड लाइफ ट्रस्ट ऑफ इंडिया (डब्ल्यूटीआई) ने साल 2017 में एक रिपोर्ट पेश की थी, जिसमें बताया गया था कि झारखंड, ओडिशा, छत्तीसगढ़ और दक्षिण पश्चिम बंगाल का 21 हजार वर्ग किलोमीटर इलाका हाथियों का आवास है। मानव-हाथी संघर्ष के चलते देशभर में जितने लोगों की जान जाती है उनमें से 45 फीसदी इसी इलाके से हैं।

बात यह है कि यहां हाथियों की संख्या में लगातार कमी दर्ज हो रही है। राज्य में आखिरी बार 2017 में हाथियों की गिनती हुई थी और इनकी संख्या 555 बताई गई थी, जबकि इसके पांच साल पहले हुई गणना में इनकी संख्या 688 थी। दूसरी तरफ हाथियों के हमले में होने वाली मौतों का सिलसिला भी नहीं थम रहा। 22-23 में अब तक हाथियों के हमले में 100 से ज्यादा लोग मारे गए हैं। 21-22 में राज्य में 133 लोगों की जान गई थी, तो वर्ष 20-21 में 84 लोग मारे गए थे। जाहिर है, हाथी-मानव संघर्ष में नुकसान दोतरफा हो रहा है।

वन्य एवं पर्यावरण विशेषज्ञ मानते हैं कि एक जंगल से दूसरे जंगल हाथियों के सुरक्षित आने-जाने के लिए कॉरिडोर विकसित किए जाने चाहिए। कॉरिडोर ऐसे हों, जहां मानवीय गतिविधियां न्यूनतम हों। देश के 22 राज्यों में 27 हाथी कॉरिडोर अधिसूचित हैं। इनमें से झारखंड में एक भी हाथी कॉरिडोर नहीं है। एक रिपोर्ट के मुताबिक भारत में हाथियों के 108 कॉरिडोर चिह्नित हैं। इनमें 14 झारखंड में हैं, लेकिन एक भी अधिसूचित नहीं है। ऐसे में हाथियों के कॉरिडोर वाले इलाकों में भी बगैर सोचे-समझे निर्माण या खनन कार्य कराए जा रहे हैं। प्रोजेक्ट एलीफेंट के लिए भारत सरकार की संचालन समिति के पूर्व सदस्य डीएस श्रीवास्तव ने पिछले दिनों बताया था कि अनियोजित विकास कार्य, खनन गतिविधियां, अनियमित चराई, जंगल की आग और माओवादियों और सुरक्षा बलों के बीच मुठभेड़ों ने जानवरों के रहवासों को बड़ा नुकसान पहुंचाया है। हाथियों को बांस और घास की छतरी के पतले होने के कारण भोजन की कमी का सामना करना पड़ रहा है। झारखंड में सारंडा जंगलों से ओड़ीशा में सुंदरगढ़ तक के हाथी कॉरिडोर खनन के कारण नष्ट हो गए। इंडियन फॉरेस्ट सर्विस के 1979 बैच के सेवानिवृत्त अफसर नरेंद्र मिश्रा की मानें तो झारखंड में जंगलों के आसपास उत्खनन, जंगल विस्फोट, नक्सल गतिविधियां, उनके खिलाफ चलाए जाने वाले अभियान और वन तस्करों की करतूतों के कारण हाथियों का प्राकृतिक निवास लगातार प्रभावित हुआ है।

मसलन, राज्य के कोल्हान प्रमंडल के जंगल हाथियों के प्राकृतिक आवास के लिए काफी मशहूर थे, लेकिन पिछले तीन दशक में उनकी आश्रयस्थली को काफी क्षति पहुंची है। खनन में बढ़ोतरी हुई। सड़क एवं रेलवे लाइन का विस्तार हुआ। आबादी भी बढ़ी। लेकिन इन सारी गतिविधियों के दौरान हाथियों के कॉरिडोर का ध्यान नहीं रखा गया। नतीजा यह कि हाथी जब जंगल से बाहर निकलते हैं तो स्वाभाविक तौर पर उनका गुस्सा भड़क उठता है। उनके खाने के साधन जंगल में कम होते जा रहे हैं। जंगल भी सिकुड़ते जा रहे हैं. लोग भी हाथी को देखते उसके साथ छेड़छाड़ पर उतर आते हैं।

झारखंड विधानसभा में 2022 के बजट सत्र में मंत्री चंपई सोरेन ने हाथियों के उत्पात से जुड़े एक सवाल के जवाब में बताया था कि वर्ष 2021-22 में हाथियों द्वारा राज्य में जानमाल को नुकसान पहुंचाये जाने से जुड़े मामलों में वन विभाग ने एक करोड़ 19 लाख रुपये के मुआवजे का भुगतान किया है। उन्होंने अपने जवाब में कहा था कि हाथियों और इंसानों के बीच द्वंद्व बढ़ने के कई कारण हैं। जनसंख्या बढ़ने के कारण वन्यजीव का प्रवास क्षेत्र प्रभावित हुआ है। गांवों में मादक पेय पदार्थ बनाए जाते हैं,जिसकी महक हाथियों को आकर्षित करती है। इस कारण भी हाथियों की आदतों और भ्रमण के मार्ग में बदलाव आया है। हाथी-मानव संघर्ष को रोकने के लिए वन विभाग ने क्विक रिस्पांस टीम का गठन किया है। यह टीम लोगों को जागरूक करती है और वैज्ञानिक और पारंपरिक तरीके से हाथियों को वापस जंगल की ओर भेजने का प्रयास करती है। लेकिन, इन सबके बावजूद सच यही है कि झारखंड में हाथियों और मानवों के संघर्ष की घटनाओं में कोई कमी दर्ज नहीं की जा रही है। ■

• कवर स्टोरी •

कर्फ्यू जैसे हालात

झारखंड के पूर्वी सिंहभूम जिले के चार प्रखंडों में दो से ढाई सौ हाथियों ने पिछले तीन महीनों से तबाही मचा रखी है। 100 से भी ज्यादा गांवों में हाथियों का दल आज यहां तो कल वहां उत्पात मचा रहा है। खौफ का आलम यह है कि इन गांवों में रात का अघोषित कर्फ्यू लागू हो गया है। किसान इनके डर से खेती नहीं कर पा रहे। हजारों बच्चों ने स्कूल जाना छोड़ दिया है। फरवरी से लेकर अब तक आठ लोग हाथियों के हमले में मारे गए हैं। एक दर्जन से ज्यादा लोग घायल हुए हैं। जिले के चार प्रखंडों चाकुलिया, बहरागोड़ा, घाटशिला और धालभूमगढ़ की 19-20 पंचायतें हाथियों के उत्पात से सबसे ज्यादा प्रभावित हैं। ये चारों प्रखंड झारखंड-पश्चिम बंगाल की सीमा पर स्थित हैं। ग्रामीणों का कहना है कि ये हाथी पश्चिम बंगाल से खदेड़कर झारखंड के इलाके में भेजे गए हैं। पश्चिम बंगाल ने हाथियों को वापस आने से रोकने के लिए अपनी सीमाओं पर गहरे नाले खोद दिए हैं। नहरों और हाईवे ने भी हाथियों के विचरण के नेचुरल कॉरिडोर को बाधित कर दिया है। नतीजतन हाथी इसी क्षेत्र में घूम रहे हैं। आहार और पानी की तलाश में हाथी इलाके की राइस मिलों, अनाज गोदाम, स्कूलों और लोगों के घरों पर हमला बोल रहे हैं। स्कूलों में रखा मिड डे मिल का अनाज चट कर रहे हैं। बीते रविवार-सोमवार को हाथियों के झुंड ने चाकुलिया के जमुआ स्थित सरकारी मिडिल स्कूल और कोटमासारा प्राइमरी स्कूलों के दरवाजे और खिड़की तोड़ दिए। हाथियों ने चाकुलिया की हवाई पट्टी के पास स्थित एफसीआई के अनाज गोदाम का मुख्य गेट तोड़ दिया। उन्होंने गोदाम का शटर भी क्षतिग्रस्त कर दिया, लेकिन वहां तक नहीं पहुंच पाए, जहां अनाज रखा था। इसके पहले चौठिया गांव स्थित बजरंग बली राइस मिल में घुसकर हाथी कई बोरा चावल खा गए। चाकुलिया प्रखंड के सरडीहा, कालापाथर, लोधाशोली, बड़ामारा, जमुआ, कालियाम, श्यामसुंदरपुर, चंदनपुर, भातकुंडा, बहरागोड़ा प्रखंड के गोपालपुर, सांडरा, खेड़ुआ, भूतिया, मानुषमुड़िया, पाथरा, धालभूमगढ़ के महुलीशोल, चुकरीपाड़ा, रावपाड़ा, जुगीशोल और घाटशिला के आसना, बांकी, भदुआ पंचायतों के दर्जनों गांव हाथियों के आतंक से सबसे ज्यादा प्रभावित हैं। वन विभाग का कहना है कि हाथियों को जंगलों की तरफ भेजने के लिए क्विक रिस्पांस टीमें लगाई गई हैं। छेड़छाड़ की वजह से हाथी ज्यादा आक्रामक हुए हैं। वन विभाग के आरसीसीएफ रवि रंजन ने बताया कि हाथियों के आतंक पर नियंत्रण के लिए पश्चिम बंगाल और उड़ीसा के वन विभाग के अफसरों के साथ लगातार बैठकें हो रही हैं। उन्होंने कहा कि हाईवे और नहरें बन जाने से हाथियों का कॉरिडोर डिस्टर्ब हुआ है। ■

"पश्चिम बंगाल ने हाथियों को वापस आने से रोकने के लिए अपनी सीमाओं पर गहरे नाले खोद दिए हैं। नहरों और हाईवे ने भी हाथियों के विचरण के नेचुरल कॉरिडोर को बाधित कर दिया है। नतीजतन हाथी इसी क्षेत्र में घूम रहे हैं। आहार और पानी की तलाश में हाथी इलाके की राइस मिलों, अनाज गोदाम, स्कूलों और लोगों के घरों पर हमला बोल रहे हैं।"

• कवर स्टोरी •

बस्तियों में हाथी

■ युगांतर प्रकृति नेटवर्क

मार्च माह में दारू, पुरनाडीह और आसपास के गांवों में हाथियों ने 30 एकड़ से भी ज्यादा इलाके में आलू, गोभी और मटर की फसल रौंद डाली। एक ग्रामीण शिवचरण साहू की गाय को भी हाथियों ने कुचल डाला। कई घरों की दीवारों को भी हाथियों ने ध्वस्त कर दिया।

इस साल मार्च में यह दृश्य दिल दहला देने वाला था, जब दर्जन से ज्यादा जिलों में हाथियों का झुंड बस्तियों में घुस कर जान-माल को नुकसान मचा रहा था। इनके आतंक से परेशान लोग मुआवजे और राहत की गुहार लेकर सड़कों पर उतर रहे थे। हजारीबाग जिले के दारू प्रखंड और आसपास के इलाकों में 22 हाथियों का एक झुंड पिछले दिनों से गांव-गांव घूमकर खेतों में खड़ी फसलों को रौंद रहा था और कच्चे मकानों को ध्वस्त कर रहा था। दहशत के मारे एक दर्जन गांवों के लोग रातें जागकर काट रहे थे। सैकड़ों लोग पुरनाडीह चौक के पास एनएच 100 पर उतर आए और इसे तीन घंटे तक जाम कर दिया था।

रिपोर्ट के अनुसार, मार्च माह में दारू, पुरनाडीह और आसपास के गांवों में हाथियों ने 30 एकड़ से भी ज्यादा इलाके में आलू, गोभी और मटर की फसल रौंद डाली। एक ग्रामीण शिवचरण साहू की गाय को भी हाथियों ने कुचल डाला। कई घरों की दीवारों को भी हाथियों ने ध्वस्त कर दिया। वन विभाग के मुताबिक इस झुंड में एक गर्भवती हथिनी थी। एक-दो दिन में बच्चा जन्म देने वाली थी। इसलिए हाथी यहां से टस से मस नहीं हो रहे। सामान्य तौर पर पानी के पास ही हथिनी बच्चे को जन्म देती है इस वजह से इन्हें यहां से हटाना भी मुश्किल हुआ था। ग्रामीण जब सड़क पर उतरे तो वन विभाग के अफसर मौके पर पहुंचे। उन्होंने आश्वस्त किया कि हाथियों को भगाने के लिए जल्द ही पश्चिम बंगाल के बांकुड़ा से विशेषज्ञों की टीम बुलाई जाएगी। अंचलाधिकारी ने भी ग्रामीणों को आश्वासन दिया कि हाथियों द्वारा नष्ट की गई फसलों का मुआवजा दिलाया जाएगा। सिमडेगा, पूर्वी सिंहभूम, पश्चिम सिंहभूम, सरायकेला-खरसावां, कोडरमा, पलामू, लोहरदगा, लातेहार जिलों में भी विभिन्न क्षेत्रों में 100 से ज्यादा हाथी आबादी वाले इलाकों में मौजूद थे और आतंक मचा रहे थे। हाथियों के जीवन और व्यवहार पर शोध करने वाले तनवीर अहमद बनाते हैं कि हाथियों का परंपरागत कॉरिडोर लगातार प्रभावित हो रहा है और इस वजह से वे आबादी वाले इलाकों में घुस रहे हैं। देशभर के 22 राज्यों में 27 हाथी कॉरिडोर हैं। झारखंड में एक भी हाथी कॉरिडोर नहीं है। एक रिपोर्ट में खुलासा किया गया है कि भारत में हाथियों के 108 कॉरिडोर चिन्हित हैं जिनमें 14 झारखंड में हैं, लेकिन एक भी अधिसूचित नहीं है। ■

सीओपी ग़रीब देशों की मजबूरी

■ नवीन सिंह खड़का

मिस्र में जलवायु परिवर्तन के मुद्दे पर हो रही बैठक 'सीओपी' में जिन दो शब्दों का बोलबाला हो सकता है, वो हैं - 'नुक़सान और क्षति'। लेकिन इन दोनों शब्दों का अर्थ क्या है और इन पर बहस क्यों हो रही है। जलवायु परिवर्तन पर अब तक जो भी वार्ताएं हुई हैं, वो ग्रीन हाउस गैसों को कम करने और जलवायु परिवर्तन के प्रभाव से बचने के तरीके तलाशने पर केंद्रित रही हैं। लेकिन इस साल की बैठक में एक तीसरे मुद्दे पर चर्चा हो सकती है। क्या औद्योगिकीकरण का फ़ायदा उठाने वाले देशों, जिनकी जलवायु परिवर्तन में बड़ी भूमिका रही है, उन देशों को आर्थिक भुगतान करना चाहिए जो जलवायु परिवर्तन से सीधे रूप से प्रभावित हो रहे हैं।

जलवायु परिवर्तन की वजह से बाढ़, सूखा, समुद्री तूफ़ान, भूस्खलन और जंगलों में आग जैसी आपदाओं की संख्या और उनके असर में बढ़ोतरी होती जा रही है और इन आपदाओं के शिकार होने वाले देश इनसे उबरने के लिए आर्थिक मदद मांग रहे हैं। इस शब्द युग्म 'नुक़सान और क्षति' का यही मतलब है। ये शब्द युग्म आर्थिक नुक़सान जैसे घरों, ज़मीन, खेतों और व्यापारिक प्रतिष्ठानों को होने वाले नुक़सान के साथ -साथ ग़ैर-आर्थिक क्षति जैसे इंसानों की मौत, सांस्कृतिक स्थानों और जैव-विविधता की क्षति को बयां करता है।

'नुक़सान और क्षति' पर बातचीत के लिए तैयार

सीओपी शुरू होने से पहले दो दिन में हुई गहन बातचीत के बाद डेलिगेट्स इसे आधिकारिक एजेंडे में शामिल करने के लिए राज़ी हुए हैं। ग़रीब देश जिस राशि की मांग कर रहे हैं, वो क्लाइमेट फ़ाइनेंसिंग के तहत तय हुई 100 अरब डॉलर की राशि से अलग है। समृद्ध देश ग़रीब देशों को बदलती हुई जलवायु के साथ ढलने एवं ग्रीन हाउस गैसों को कम करने के लिए हर साल 100 अरब डॉलर की राशि देने के लिए तैयार हुए हैं। क्लाइमेट एक्शन नेटवर्क इंटरनेशनल (एनजीओ) से जुड़े वैश्विक राजनीतिक रणनीतिकार हरजीत सिंह बताते हैं, 'आम लोग भयानक तूफ़ानों और बाढ़ के साथ-साथ पिघलते ग्लेशियरों की वजह से होने वाला 'नुक़सान और क्षति' उठा रहे हैं। विकासशील देशों में रहने वाले लोगों को एक आपदा का शिकार बनने के बाद दूसरी आपदा आने से पहले उबरने के लिए पर्याप्त मदद भी नहीं मिल पाती है वो समुदाय जो इस संकट के लिए सबसे कम ज़िम्मेदार

हैं, उन पर इनका सबसे ज्यादा असर पड़ रहा है।'

'नुक़सान और क्षति' के लिए कितना हर्जाना?

जलवायु परिवर्तन से होने वाले 'नुक़सान और क्षति' के लिए हर्जाने की गणना करने के लिए दुनिया भर में सौ से ज़्यादा शोधार्थी और नीति-विशेषज्ञ काम कर रहे हैं। इन विशेषज्ञों के समूह 'लॉस एंड डैमेज़ कॉलेबोरेशन' ने अपनी हालिया रिपोर्ट में बताया है कि जलवायु परिवर्तन की वजह से जोख़िमपूर्ण स्थिति में बनी हुई अर्थव्यवस्थाओं में से 55 अर्थव्यवस्थाओं को साल 2000 से 2020 के बीच जलवायु परिवर्तन की वजह से एक ट्रिलियन डॉलर का आर्थिक नुक़सान हुआ है। अगले दशक में इस नुक़सान में आधा ट्रिलियन की बढ़त हो सकती है। इस रिपोर्ट के लेखक बताते हैं, 'जलवायु के मौजूदा स्तर में अंशमात्र वृद्धि होने का भी मतलब जलवायु परिवर्तन के प्रभाव में अतिरिक्त बढ़ोतरी है। विकासशील देशों में 2030 तक जलवायु परिवर्तन से होने वाला आर्थिक नुक़सान 290 से 580 अरब डॉलर तक होने की आशंका है।' दुनिया पहले ही जलवायु में औद्योगीकरण से पहले की तुलना में औसत 1.1 डिग्री सेल्सियस की बढ़त देख चुकी है।

ग़रीब और कम औद्योगिक देश कहते हैं कि भीषण मौसमी घटनाओं की वजह से उन्होंने जो कुछ प्रगति की है, उस पर पानी फिर जाता है। कुछ देश कहते हैं कि वे क़र्ज़ तले दब चुके हैं और उन्हें जो नुक़सान और क्षति हुई है, उसकी भरपाई के लिए क़र्ज़ लेना पड़ रहा है।'

कब से चल रही है इस मुद्दे पर बात?

अब से सात साल पहले पेरिस में हुए ऐतिहासिक जलवायु समझौते में इस बात के महत्व को स्वीकार किया गया था कि जलवायु परिवर्तन की वजह से होने वाले 'नुक़सान और क्षति' से बचना और नुक़सान की आशंकाओं को कम करना कितना ज़रूरी है। लेकिन इस पर ये तय नहीं हुआ है कि ये कैसे किया जाए। जर्मन मंत्री योहान फ्लासबार्थ कहते हैं, 'कई सालों तक 'नुक़सान और क्षति' का मुद्दा काफ़ी विवादित रहा है। और इस मुद्दे पर विकसित और विकासशील देशों के बीच काफ़ी गरमा-गरम बहसें हुई हैं। विकसित देशों को इस बात की चिंता रही है कि ये बड़े उत्सर्जकों के लिए क़ानूनी बाध्यता बन सकती है। ऐसे में विकसित देशों के लिए ये हमेशा से लक्ष्मण रेखा जैसी रही है।'

मिस्र में वार्ताकारों ने कहा है कि समृद्ध देश ये स्पष्ट करना चाहते थे कि वे 'नुक़सान और क्षति' के लिए किसी तरह का दायित्व या हर्जाना देने की बाध्यता स्वीकार नहीं कर रहे हैं।

विकासशील देशों ने इसका विरोध किया। इसके बाद आख़िरकार ये तय हुआ है कि 'दायित्व या हर्जाने' पर चर्चा नहीं की जाएगी। हालांकि, सीओपी में 'नुक़सान और क्षति' पर चर्चा की जाएगी। इसका उद्देश्य अगले साल अबु धाबी में होने वाली बैठक में अंतरिम और 2024 में निर्णायक फ़ैसला लेना है। संयुक्त राष्ट्र की जलवायु परिवर्तन की बैठकों में अफ़्रीका ग्रुप के मुख्य जलवायु वार्ताकार अल्फ़ा ओमर कलोगा कहते हैं, 'हम लगातार नियमित, सतत और अपेक्षित फ़ंडिंग की मांग कर रहे हैं ताकि विकासशील देश उन संकटों का सामना कर सकें जिनका सामना वे आजकल रोज़ाना के स्तर पर कर रहे हैं।'

> **सीओपी शुरू होने से पहले**
> दो दिन में हुई गहन बातचीत के बाद डेलिगेट्स इसे आधिकारिक एजेंडे में शामिल करने के लिए राज़ी हुए हैं। ग़रीब देश जिस राशि की मांग कर रहे हैं, वो क्लाइमेट फ़ाइनेंसिंग के तहत तय हुई 100 अरब डॉलर की राशि से अलग है।

वे कहते हैं कि ये क़रार इस दिशा में होती प्रगति का प्रतीक है, लेकिन हमें ये देखना होगा कि ये बातचीत कहां तक जाती है। क्लाइमेट एक्शन नेटवर्क से जुड़े हरजीत सिंह इस क़रार को एक समझौता बताते हैं। वे कहते हैं, 'अमीर देशों ने विकासशील देशों पर दबाव डालकर इस समझौते में उस भाषा को स्वीकार करने के लिए मजबूर किया है जो इन ऐतिहासिक प्रदूषकों को 'हर्जाने और दायित्व' से बचाती है। यही नहीं, अमीर देशों ने ऐसा करते हुए जोख़िम का सामना कर रहे लोगों और देशों को मदद पहुंचाने की दिशा में भी कोई माकूल समर्पण नहीं जताया है। ऐसे में ये भरोसा तोड़ने जैसा है।'

नुक़सान और क्षति को लेकर मतभेद क्यों?

देशों के लिए ये तय करना मुश्किल हो सकता है कि 'नुक़सान और क्षति' के लिए हर्जाना तय करने की ज़िम्मेदारी कौन सी संस्था निभाएगी। विकसित देशों का कहना है कि इसके लिए संयुक्त राष्ट्र के यूएन फ्रेमवर्क कन्वेंशन ऑन क्लाइमेट चेंज में व्यवस्थाएं हैं और वह ये ज़िम्मेदारी संभाल सकती है। इसके साथ ही अगर कुछ इंतज़ाम यूएनएफ़सीसी से परे होंगे तो संयुक्त राष्ट्र उसके लिए व्यवस्था कर सकती है। हालांकि, विकासशील देशों का कहना है कि अभी जो संस्थाएं सक्रिय हैं, वे इसके लिए उचित नहीं हैं। यूएन की जलवायु परिवर्तन से जुड़ी बैठकों में 39 छोटे द्वीपीय देशों के गुट एओसिस के क्लाइमेट फ़ाइनेंस

वार्ताकार मिचाई रॉबर्टसन कहते हैं, 'ये संस्थाएं उस वक़्त कहां थी जब पाकिस्तान और नाइजीरिया में बाढ़ कहर बरपा रही थी या हाल ही में जब तूफ़ान ईयान ने कैरिबियाई क्षेत्र को अपनी चपेट में लिया था। ये 'नुक़सान और क्षति' पर काम नहीं करते।'

सीओपी से पहले इस दिशा में कोई प्रगति हुई?

स्कॉटलैंड में 'सीओपी 26' के दौरान 'नुक़सान और क्षति' के लिए एक मिलियन डॉलर से कुछ अधिक राशि देने का संकल्प लिया गया था। पिछले महीने डेनमार्क ने कहा है कि वह इसमें 13 मिलियन डॉलर देगा। और पिछले हफ़्ते यूरोपीय संसद ने एक प्रस्ताव पास किया है जिसके केंद्र में विकासशील देशों को फ़ंड करने के साथ-साथ क़र्ज़ की जगह अनुदान को तरजीह देना था ताकि वे 'नुक़सान और क्षति' से बच सके, उसके असर को कम करने के साथ उससे जूझ सकें। जी-7 और जोख़िम का सामना कर रहे 55 देशों के समूह वी-20 हाल ही में 'ग्लोबल शील्ड अगेंस्ट क्लाइमेट डिज़ास्टर' नामक पहल को शुरू करने पर सहमत हुए हैं। इस पहल के तहत 'नुकसान और क्षति' के लिए आंशिक रूप से बीमा के ज़रिए पैसा दिया जाएगा। एओसिस कहता है कि इसे वैध नहीं ठहराया जा सकता क्योंकि वी20 में उतने सदस्य भी नहीं हैं जितने एओसिस में हैं। मिचाई रॉबर्टसन कहते हैं, 'जी-7 को हम सब से बात करनी चाहिए, न कि उन देशों से जिन्हें उन्होंने चुना है।'

क्या ग़रीब देशों को मिल रहा है क्लाइमेट फ़ाइनेंस फंड?

आर्थिक संस्थाओं की ओर से क्लाइमेट फ़ंड जारी होने के साथ-साथ देशों तक ये पैसा पहुंचने में पहले भी समस्याएं आती रही हैं। अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं की ब्यूरोक्रेसी के चलते आर्थिक कोष जारी होने में समय लगता है। और वो देश जहां ये पैसा पहुंचना होता है, वहां ख़राब प्रशासन और भ्रष्टाचार की समस्याएं हैं। हालांकि, ग़रीब देश इसे 'नुक़सान और क्षति' को एक तरफ़ खिसकाने के लिए सफ़ाई के रूप में स्वीकार नहीं करेंगे।

भारत इस बहस में कहां खड़ा है?

यूएन ऑफ़िस फ़ॉर डिज़ास्टर रिस्क रिडक्शन की एक रिपोर्ट में सामने आया है कि पिछले 20 सालों में दुनिया भर में प्राकृतिक आपदाओं में बढ़ोतरी हुई है। भारत ने इस अवधि के दौरान तीसरी सबसे ज़्यादा प्राकृतिक आपदाओं का सामना किया। भारत के राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन संस्थान के मुताबिक़, भारत ने साल 1995 से 2020 के बीच जलवायु परिवर्तन से जुड़ी 1058 आपदाओं का सामना किया है जिनमें तूफ़ान, सूखा, शीत लहर और लू आदि शामिल हैं। राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन संस्थान ने साल 2019 में बताया था कि भारत का लगभग 13 फ़ीसद हिस्सा जिसमें 19 राज्य और केंद्र शासित प्रदेश शामिल हैं, भूस्खलन के ख़तरे का सामना कर रहे हैं। इसकी वजह से आर्थिक नुक़सान हो रहा है। विश्व मौसम विज्ञान संगठन ने अपनी रिपोर्ट 'स्टेट ऑफ़ क्लाइमेट इन एशिया' में बताया है कि भारत को साल 2020 में प्राकृतिक आपदाओं की वजह से 87 अरब डॉलर का नुक़सान हुआ है। हालांकि, इन सभी आपदाओं को सीधे तौर पर जलवायु परिवर्तन से नहीं जोड़ा जा सकता। इनमें से कुछ आपदाएं सीधे तौर पर और कुछ आपदाएं आंशिक रूप से जलवायु परिवर्तन से जुड़ी हुई हैं। लेकिन वैज्ञानिक अध्ययनों में सामने आया है कि भारत के ज़्यादा हिस्सों पर जलवायु परिवर्तन से होने वाले नुक़सानों का ख़तरा मंडरा रहा है। इनमें पहाड़, तटवर्ती क्षेत्र, रेगिस्तान, जंगल और प्रायद्वीपीय क्षेत्र जैसे अलग-अलग तरह के पारिस्थितिक तंत्र शामिल हैं। इसी वजह से भारत जलवायु परिवर्तन के मुद्दे पर ग़रीब देशों के साथ खड़ा होकर मांग कर रहा है कि विकसित देश जलवायु परिवर्तन से होने वाले 'नुक़सान और क्षति' के लिए अतिरिक्त आर्थिक मदद उपलब्ध कराए। मिस्र के शर्म अल शेख शहर में पहुंचने के बाद भारत के पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री भूपेंद्र यादव ने ट्वीट किया है - 'सीओपी में कारगर क़दम उठाए जाने चाहिए। ऐसे नतीजे सामने आने चाहिए जिनका मक़सद जलवायु परिवर्तन रोकने पर हुए ख़र्च से लेकर बदलती जलवायु के साथ ढलने की दिशा में उठाए गए क़दमों के नतीजों और 'नुक़सान और क्षति' को परिभाषित करना हो।' ■

With Best Compliments From

स्वर्णरेखा क्षेत्र विकास ट्रस्ट

स्वर्णरेखा क्षेत्र विकास ट्रस्ट समाजसेवा के क्षेत्र में कई काम कर रहा है। पर्यावरण से लेकर रक्तदान शिविर तक और जरूरतमंदों की मदद से लेकर शिक्षा की अलख जगाने तक...

इन क्षेत्रों में काम करता है स्वर्णरेखा क्षेत्र विकास ट्रस्ट

- स्वच्छता
- चैरिटी
- पर्यावरण
- शिक्षा
- हेल्थ
- भोजनालय

नदी को साफ करने की जरूरत नहीं। बरसात में नदियां खुद को साफ कर लेती हैं। आप नदी को गंदा करने का कोई प्रयास नहीं करेंगे तो नदी साफ ही रहेगी।

-सरयू राय

(दामोदर बचाओ आंदोलन के प्रणेता और विधायक, जमशेदपुर पूर्वी, झारखंड)

युगांत

भारत के पूर्वी राज्यो

01 JANUARY

MO	TU	WE	TH	FR	SA	SU
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

02

MO
5
12
19
26

05 MAY

MO	TU	WE	TH	FR	SA	SU
1	2	1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

06

MO
3
10
17
24

09 SEPTEMBER

MO	TU	WE	TH	FR	SA	SU
30			2	3	4	1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29

10

MO
7
14
21
28

र प्रकृति

ं का एकमात्र पर्यावरण मासिक

CALENDAR 2024

FEBRUARY

U	WE	TH	FR	SA	SU
		1	2	3	4
	7	8	9	10	11
3	14	15	16	17	18
0	21	22	23	24	25
7	28	29			

03 MARCH

MO	TU	WE	TH	FR	SA	SU
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31

04 APRIL

MO	TU	WE	TH	FR	SA	SU
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30					

JUNE

U	WE	TH	FR	SA	SU
				1	2
	5	6	7	8	9
1	12	13	14	15	16
8	19	20	21	22	23
5	26	27	28	29	30

07 JULY

MO	TU	WE	TH	FR	SA	SU
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

08 AUGUST

MO	TU	WE	TH	FR	SA	SU
1	2	3	1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	29

OCTOBER

U	WE	TH	FR	SA	SU
	2	3	4	5	6
3	9	10	11	12	13
5	16	17	18	19	20
2	23	24	25	26	27
9	30	31			

11 NOVEMBER

MO	TU	WE	TH	FR	SA	SU
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30			

12 DECEMBER

MO	TU	WE	TH	FR	SA	SU
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

With best compliments from Yugantar Bharti

Reaching Out for a Brighter Tomorrow

जानवरों में होती है ठंड से बचने की खास खूबी

ठंड शुरू होते ही कुछ जानवरों में बदलाव होने लगते हैं और उनके शरीर के बाल बेहद घने उगने लगते हैं। शेर, बाघ, तेंदुआ, भेड़िया, लंगूर और बंदरों के साथ बिल्कुल ऐसा ही होता है।

■ युगांतर प्रकृति नेटवर्क

दिल्ली में टेंपरेचर लगातार गिर रहा है। ठंड कड़ाके की पड़ रही है। पहाड़ी इलाकों में बाहर रखा पानी भी बर्फ हो जा रहा है। लेकिन इस दौरान आपने जानवरों को सड़कों पर या जंगलों में ऐसे ही घूमते देखा होगा। इंसानों ने ठंड से बचने के लिए अपने घरों में कई तरह की आधुनिक सुविधाएं इकट्ठा की हुई हैं। लेकिन क्या आपको मालूम है कि जानवर ठंड से बचने के लिए क्या करते हैं। जो पालतू जानवर हैं उनकी देखरेख आप भले ही कर लेते हैं, लेकिन जो जानवर जंगली हैं या फिर आवारा घूमते हैं वह क्या करते हैं।

ठंड महसूस कैसे होती है

सबसे बड़ा सवाल तो यही है कि आखिर किसी को ठंड महसूस कैसे होती है। जर्मन स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी कोलोन के वैज्ञानिक योआखिम लाट्स के मुताबिक, इंसान की त्वचा में तापमान को भांपने वाले सेंसर होते हैं, इन हीट सेंसर कहा जाता है। यही सेंसर इंसानों को सर्दी, गर्मी या फिर अच्छे मौसम का एहसास कराते हैं। यानी अगर आपकी त्वचा पर गर्मी का एहसास होगा तो यह सेंसर दिमाग के जरिए पूरे शरीर में गर्मी का एहसास कराएगा और अगर आपकी त्वचा पर ठंडी का एहसास होगा तो यह सेंसर पूरे शरीर को ठंड का एहसास कराएगा।

जानवरों के साथ ठंड में क्या होता है

अलग-अलग तरह के जानवर ठंड से बचने के लिए अलग-अलग तरह की तरकीब अपनाते हैं। जैसे अगर इंसान को ठंड ज्यादा लगती है तो हम उठे और गर्म कपड़े पहन ने लगता है, उसी तरह ठंड शुरू होते ही कुछ जानवरों में बदलाव होने लगते हैं और उनके शरीर के बाल बेहद घने उगने लगते हैं। शेर, बाघ, तेंदुआ, भेड़िया, लंगूर और बंदरों के साथ बिल्कुल ऐसा ही होता है। ज्यादा घने बाल होने की वजह से ठंड सीधे उनके स्किन को छू नहीं पाती और इस वजह से उन्हें ज्यादा ठंड नहीं लगती।

ये जानवर ठंड में रंग बदल लेते हैं

जिस तरह से कुछ जानवर ठंड के दौरान अपने शरीर पर घने बाल उगा लेते हैं, उसी तरह से इस दुनिया में ऐसे भी जानवर हैं जो ठंड से बचने के लिए अपने शरीर का रंग बदल लेते हैं। रेंडियर ऐसे ही जीवो में से एक है। दरअसल, जैसे ही ठंड ज्यादा पड़ती है रेंडियर के शरीर के बाल गहरे भूरे रंग के होने लगते हैं। हालांकि, इसके पीछे एक वजह यह भी बताई जाती है कि इनके शरीर पर जब ठंडियों के दौरान नए बाल तेजी से उगने लगते हैं ये तो देखने में ज्यादा भूरे लगते हैं। ■

ग्लोबल साउथ की प्राथमिकताओं से न हो समझौताः नरेंद्र मोदी

प्रधानमंत्री ने इस बात पर जोर दिया कि जैसे-जैसे राष्ट्र जलवायु कार्रवाई को आगे बढ़ाते हैं, यह समानता, जलवायु न्याय, साझा दायित्वों और साझा क्षमताओं पर आधारित होना चाहिए। इन सिद्धांतों का पालन करके, हम एक स्थायी भविष्य की ओर एक रास्ता बना सकते हैं जो किसी को भी पीछे नहीं छोड़ेगा। हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि ग्लोबल साउथ की विकास प्राथमिकताओं से समझौता न किया जाए। पीएम मोदी ने इस दिशा में भारत द्वारा की जा रही कई पहलों के बारे में भी विस्तार से बताया।

जलवायु परिवर्तन के खिलाफ मजबूत वैश्विक सहयोग की वकालत करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि ये कदम ग्लोबल साउथ की विकास प्राथमिकताओं से समझौता न करें। कॉप 28 जलवायु शिखर सम्मेलन के लिए दुबई में मौजूद प्रधानमंत्री मोदी ने संयुक्त अरब अमीरात स्थित समाचार पत्र अलेतिहाद से बात करते हुए कहा कि भारत एकमात्र ऐसा देश है जो अपने राष्ट्रीय निर्धारित योगदान (एनडीसी) को प्राप्त करने की राह पर है। जलवायु वित्त के बारे में पीएम मोदी ने कहा कि उन्होंने हमेशा कहा है कि जलवायु परिवर्तन एक सामूहिक चुनौती है जो एकीकृत वैश्विक प्रतिक्रिया की मांग करती है। उन्होंने कहा, "यह पहचानना जरूरी है कि विकासशील देशों ने इस समस्या को पैदा में योगदान नहीं दिया है। फिर भी विकासशील देश समाधान का हिस्सा बनने के इच्छुक हैं। लेकिन, वे आवश्यक वित्तपोषण और प्रौद्योगिकी तक पहुंच के बिना योगदान नहीं कर सकते इसलिए मैंने अपेक्षित जलवायु वित्तपोषण और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण सुनिश्चित करने के लिए वैश्विक सहयोग की पुरजोर वकालत की है।

प्रधानमंत्री ने इस बात पर जोर दिया कि जैसे-जैसे राष्ट्र जलवायु कार्रवाई को आगे बढ़ाते हैं, यह समानता, जलवायु न्याय, साझा दायित्वों और साझा क्षमताओं पर आधारित होना चाहिए। इन सिद्धांतों का पालन करके, हम एक स्थायी भविष्य की ओर एक रास्ता बना सकते हैं जो किसी को भी पीछे नहीं छोड़ेगा। हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि ग्लोबल साउथ की विकास प्राथमिकताओं से समझौता न किया जाए। पीएम मोदी ने इस दिशा में भारत द्वारा की जा रही कई पहलों के बारे में भी विस्तार से बताया।

हमने टिकाऊ जीवनशैली पर एक वैश्विक मिशन शुरू किया है– लाइफ, लाइफस्टाइल फॉर एनवायरनमेंट जो टिकाऊ उपभोग जीवनशैली में बदलाव और परिपत्र अर्थव्यवस्था सिद्धांतों को बढ़ावा देता है। मिशन LiFE के लिए मेरा आह्वान इस विश्वास पर आधारित है कि ग्रह-समर्थक जीवनशैली और विकल्पों का एक जन आंदोलन वैश्विक जलवायु कार्रवाई में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है।

-प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी

एलेतिहाद की रिपोर्ट के अनुसार, मिशन लाइफस्टाइल फॉर एनवायरनमेंट (मिशन LiFE), दुनिया को पर्यावरण के अनुकूल जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित करने की एक पहल है। पीएम मोदी ने कहाः हमने टिकाऊ जीवनशैली पर एक वैश्विक मिशन शुरू किया है– लाइफ, लाइफस्टाइल फॉर एनवायरनमेंट जो टिकाऊ उपभोग जीवनशैली में बदलाव और परिपत्र अर्थव्यवस्था सिद्धांतों को बढ़ावा देता है। मिशन LiFE के लिए मेरा आह्वान इस विश्वास पर आधारित है कि ग्रह-समर्थक जीवनशैली और विकल्पों का एक जन आंदोलन वैश्विक जलवायु कार्रवाई में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है। भारत ने स्वैच्छिक, ग्रह-समर्थक कार्यों को प्रोत्साहित करने के लिए एक तंत्र की भी संकल्पना की है जो जलवायु परिवर्तन पर प्रभावी ढंग से प्रतिक्रिया दे सकता है, जिसे "ग्रीन क्रेडिट पहल" कहा जाता है। भारत ने जनवरी 2023 में अपने राष्ट्रीय हरित हाइड्रोजन मिशन की घोषणा की, जिसका उद्देश्य हरित हाइड्रोजन और उसके डेरिवेटिव के उत्पादन, उपयोग और निर्यात के लिए एक वैश्विक केंद्र बनना है। हाल ही में, नई दिल्ली हरित हाइड्रोजन उत्पादन पर विशेष ध्यान देने के साथ प्रौद्योगिकियों को बढ़ाने में मदद के लिए एक संयुक्त हाइड्रोजन टास्क फोर्स स्थापित करने पर भी सहमत हुई। मोदी ने कहा कि देश में 2030 तक 5 एमएमटीपीए हरित हाइड्रोजन उत्पादन का लक्ष्य है। राष्ट्रीय हरित हाइड्रोजन मिशन के लिए 80 गीगावॉट इलेक्ट्रोलाइज़र क्षमता और 125 गीगावॉट नवीकरणीय ऊर्जा की आवश्यकता है, जिसमें लगभग 100 बिलियन अमेरिकी डॉलर का

कुल निवेश होने का अनुमान है। उन्होंने आगे आग्रह किया, यूएई के दोस्तों, जिनके पास पहले से ही भारत के नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र में पर्याप्त निवेश है, से भारत में हरित हाइड्रोजन क्षेत्र में निवेश करें। प्रधानमंत्री मोदी ने इस बात पर जोर दिया कि भारत की जी20 अध्यक्षता के दौरान जलवायु कार्रवाई प्राथमिकता वाले विषयों में से एक थी और नई दिल्ली जी20 शिखर सम्मेलन में इस पर उचित रूप से ध्यान दिया। मुझे खुशी है कि हाल ही में नई दिल्ली जी20 शिखर सम्मेलन के दौरान, इस पहलू पर उचित तौर से गौर किया गया है, जिसमें वैश्विक स्तर पर सभी स्रोतों से निवेश और जलवायु वित्त को अरबों से खरबों डॉलर तक तेजी से और बड़े पैमाने पर बढ़ाने की आवश्यकता की मान्यता भी शामिल है। भारत की जी20 अध्यक्षता के दौरान, देश ने सुनिश्चित किया कि जलवायु परिवर्तन और जलवायु कार्रवाई पर विशेष ध्यान दिया जाए, जो जी20 नई दिल्ली नेताओं की घोषणा में नजर आता है। इनमें हरित विकास समझौता, एसडीजी की प्रगति में तेजी लाने पर जी20 2023 कार्य योजना, सतत विकास के लिए जीवन शैली के उच्च-स्तरीय सिद्धांत, हाइड्रोजन पर उच्च-स्तरीय स्वैच्छिक सिद्धांत, साथ ही आपदा राहत कार्य समूह का संस्थागतकरण, शामिल हैं। पिछले 9 वर्षों में भारत ने उदाहरण के तौर पर प्रदर्शित किया है कि देश जलवायु परिवर्तन से निपटने में अपनी भूमिका निभाने में सबसे आगे है। कॉप 26 में, मैंने 'पंचामृत' – भारत की पांच महत्वाकांक्षी प्रतिबद्धताएं- जिनमें वैश्विक जलवायु कार्रवाई में हमारे योगदान के रूप में प्रस्तुत किया। पांच महत्वाकांक्षी प्रतिबद्धताओं में निम्नलिखित चीजें शामिल हैं: 2030 तक 500GW गैर-जीवाश्म ऊर्जा क्षमता तक पहुंचना; यह सुनिश्चित करना कि 2030 तक इसकी 50 प्रतिशत ऊर्जा आवश्यकताएं नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों से पूरी हों; अब से 2030 के बीच कुल अनुमानित कार्बन उत्सर्जन में 1 बिलियन टन की कमी करना; 2030 तक अर्थव्यवस्था की कार्बन तीव्रता को 2005 के स्तर से 45 प्रतिशत कम करना; और 2070 तक शुद्ध शून्य उत्सर्जन के लक्ष्य को प्राप्त करना, एलेतिहाद ने यह जानकारी दी है।

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि भारत ने अपने वादों को अमल में लाया है और COP27 से पहले अपने अद्यतन राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान (NDCs) प्रस्तुत किए हैं, और दीर्घकालिक-निम्न उत्सर्जन विकास रणनीति (LT-LEDS) प्रस्तुत की है, जिसने COP27 के दौरान इसके नेट जीरो के कदम को आगे बढ़ाया है। यह देखते हुए कि भारत अपने राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान (एनडीसी) को प्राप्त करने वाला एकमात्र देश है, पीएम मोदी ने आगे कहा कि वैश्विक स्तर पर जलवायु दृष्टिकोण उतना सकारात्मक नहीं है। लेकिन, उन्होंने उम्मीद जताई कि COP28 शिखर सम्मेलन वैश्विक समुदाय को 2030 के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सक्रिय करेगा। हम एकमात्र जी20 देश हैं जो अपने एनडीसी को हासिल करने की राह पर हैं। दुर्भाग्य से, वैश्विक स्तर पर, जलवायु को लेकर नजरिया उतना सकारात्मक नहीं है, और ऐसी चिंताएं हैं कि हम एक वैश्विक समुदाय के रूप में अपने 2030 के लक्ष्यों को प्राप्त नहीं कर पाएंगे। राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान, उत्सर्जन में कटौती और जलवायु प्रभावों के अनुकूल होने के लिए एक जलवायु कार्य योजना है। पेरिस समझौते के प्रत्येक पक्ष को एक एनडीसी स्थापित करना और हर पांच साल में इसे अपडेट करना आवश्यक है। प्रधानमंत्री ने कहा कि मुझे उम्मीद है कि यह आयोजन वैश्विक समुदाय को गलती में सुधार करने और प्रयासों को दोगुना करने के लिए प्रेरित करेगा ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि हम अपने 2030 लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए ट्रैक पर लौट आएं। ■

कॉप 28 के उद्देश्य

कॉप 28 का मुख्य उद्देश्य था जलवायु आपदा से निपटने के लिए वैश्विक सहमति विकसित करना, वैश्विक तापमान में वृद्धि को 1.5 डिग्री सेल्सियस तक सीमित करना, उन समुदायों की सहायता करना जो जलवायु परिवर्तन के परिणामों के प्रति सबसे अधिक संवेदनशील हैं, 2050 तक शुद्ध-शून्य उत्सर्जन प्राप्त करना, 2050 तक शुद्ध-शून्य उत्सर्जन का लक्ष्य 2050 तक मानव-निर्मित या प्राकृतिक प्रक्रियाओं के माध्यम से उनके निष्कासन के साथ वातावरण में ग्रीनहाउस गैसों की रिहाई को संतुलित करना, जलवायु परिवर्तन शब्द को लेकर पृथ्वी के दीर्घकालिक जलवायु पैटर्न में उल्लेखनीय और लगातार परिवर्तनों का वर्णन करना आदि है। यह कॉप की 28वीं बैठक थी और इसका संचालन बेहद शानदार रहा। भारत ने अपना पक्ष मजबूती से रखा, जिसे दुनिया भर में सराहना मिली।

> हम एकमात्र जी20 देश हैं जो अपने एनडीसी को हासिल करने की राह पर हैं। दुर्भाग्य से, वैश्विक स्तर पर, जलवायु को लेकर नजरिया उतना सकारात्मक नहीं है, और ऐसी चिंताएं हैं कि हम एक वैश्विक समुदाय के रूप में अपने 2030 के लक्ष्यों को प्राप्त नहीं कर पाएंगे।
>
> *-प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी*

पर्यटक सैर सपाटे के लिए सबसे ज्यादा सर्दियों का मौसम ही चुनते हैं।

मध्य प्रदेश पर्यटन के क्षेत्रीय अधिकारी केएल पटेल ने कहा कि जबलपुर, कान्हा,बांधवगढ़, बरगी, पेंच, अमरकंटक, भेड़ाघाट जैसे पर्यटन स्थलों की बात करे तो इन स्थानों में तीन सौ ज्यादा होटल संचालित है जहां पर्यटक रहते हैं।

■ युगांतर प्रकृति नेटवर्क

पर्यावरण को संतुलित रखने के लिए ठंड है बेहद अहम

ठंड क्यों जरूरी है। पर्यावरण विज्ञान विभाग के प्रमुख डा.आर के श्रीवास्तव ने बताया कि पर्यावरण संतुलन के लिए गर्मी के साथ सर्दी भी उतनी ही आवश्यक है। कई पौधों के विकास सर्दी का मौसम अनुकूल होता है। ठंडक नहीं हुई तो गर्मी बनी रहेगी इससे असंतुलन पैदा होगा। फिजियोलाजी एक्टिविटी तापमान कम होने पर क्रिया की गति कम होती है। तापमान बढ़ता है तो गति बढ़ती है। तापमान कम होने पर मानव शरीर की रचना ऐसी है आंतरिक ऊर्जा सक्रिय हो जाती और शरीर को गर्म रखती है। ये मौसम चक्र है जिसके अनुकूल हमारा शरीर ढल चुका है। यदि एकाएक ठंड पड़ेगी तो रहना मुश्किल हो जाएगा। कई पौधों को निष्क्रिय रहने के लिए कम दिनों और कम तापमान की आवश्यकता होती है। इस तरह पौधे नए विकास के लिए ऊर्जा का भंडारण कर सकते हैं। यदि एक फल के पेड़ के पास पर्याप्त चिलिंग टाइम नहीं है, तो यह कम, कमजोर कलियों का उत्पादन करेगा।

पर्यटकों की पसंदीदा मौसम

पर्यटन के लिहाज से देखे तो सर्दियां उनकी पसंदीदा मौसम है। सबसे ज्यादा पर्यटक सैर सपाटे के लिए सर्दियों का मौसम ही चुनते हैं। जबलपुर संभाग के आसपास दिसंबर माह में अकेले ढाई लाख पर्यटक सैर सपाटे के लिए निकले। होटल इंडस्ट्री भी इन दिनों का बेसब्री से इंतजार करती है। मप्र पर्यटन के क्षेत्रीय अधिकारी केएल पटेल ने कहा कि जबलपुर, कान्हा,बांधवगढ़, बरगी, पेंच, अमरकंटक, भेड़ाघाट जैसे पर्यटन स्थलों की बात करे तो इन स्थानों में तीन सौ ज्यादा होटल संचालित है जहां पर्यटक रहते हैं। अक्टूबर से जून माह तक पर्यटक अधिक सैर सपाटे पर निकलते हैं इसमें दिसंबर और जनवरी अधिक पर्यटकों के लिए अनुकूल होता है क्योंकि सर्दियों की छुट्टियां और बच्चों की छुट्टी होने से लोग इस मौसम में अधिक घूमने निकलते हैं। संभाग में पर्यटन से करीब 300 करोड़ से ज्यादा का व्यापार होता है। ■

मध्य एशिया के उच्च दबाव केंद्र से सतही हवाओं के परिणामस्वरूप शुष्क महाद्वीपीय वायु द्रव्यमान भारत में आता है ये महाद्वीपीय हवाएँ उत्तर-पूर्वी भारत में व्यापारिक हवाओं से टकराती हैं।

सर्दी और गर्मी में मौसम का तंत्र

सतही दबाव और हवाएँ

सर्दियों के महीनों के दौरान, मध्य और पश्चिमी एशिया में दबाव वितरण का भारत में मौसम की स्थिति पर सबसे अधिक प्रभाव पड़ता है। पूरे शीतकाल में उत्तर में हिमालय क्षेत्र में एक उच्च दबाव का केंद्र बनता है। उच्च दबाव का केंद्र पर्वत श्रृंखला के दक्षिण में उत्तर से भारतीय उपमहाद्वीप की ओर हवा के निम्न-स्तरीय प्रवाह का कारण बनता है। मध्य एशिया के उच्च दबाव केंद्र से सतही हवाओं के परिणामस्वरूप शुष्क महाद्वीपीय वायु द्रव्यमान भारत में आता है ये महाद्वीपीय हवाएँ उत्तर-पूर्वी भारत में व्यापारिक हवाओं से टकराती हैं। दूसरी ओर, इस संपर्क क्षेत्र की स्थिति स्थिर नहीं है। यह दुर्लभ अवसरों पर मध्य गंगा घाटी तक पूर्व की ओर पलायन कर सकता है, जिससे उत्तर-पश्चिमी और उत्तरी भारत के पूरे क्षेत्र में मध्य गंगा नदी तक शुष्क उत्तर-पश्चिमी हवाएँ आ सकती हैं।

जेट स्ट्रीम और ऊपरी वायु परिसंचरण

जेट स्ट्रीम को निचले क्षोभमंडल में पृथ्वी की सतह से 3 किमी ऊपर तक देखा जा सकता है। पृथ्वी की सतह के करीब वायुमंडलीय दबाव में बदलाव का उच्च वायु परिसंचरण के निर्माण पर बहुत कम प्रभाव पड़ता है। पश्चिमी और मध्य एशिया में पश्चिम से पूर्व की ओर 9-13 किमी की ऊंचाई पर पछुआ हवाएँ चलती रहती हैं। हिमालय के उत्तर अक्षांश पर, जेट धाराएँ एशियाई महाद्वीप पर बहती हैं, जो लगभग तिब्बती उच्चभूमि के समानांतर होती हैं। इन जेट धाराओं में, तिब्बती उच्चभूमियाँ एक अवरोध के रूप में कार्य करती हैं परिणामस्वरूप,

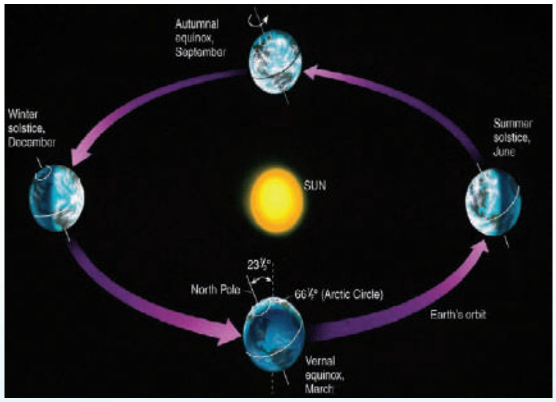

ग्रीष्म ऋतु में मौसम की क्रियाविधि

भारत में सर्वाधिक वर्षा वाले क्षेत्र इन्हीं अवदाबों के पथ हैं। जिस नियमितता के साथ ये अवसाद पूरे भारत में गुजरते हैं और उनकी दिशा और गंभीरता सभी दक्षिण पश्चिम मानसून के मौसम के दौरान वर्षा के पैटर्न को प्रभावित करती है।

सतही दबाव और हवाएँ

जब सूर्य निचली और ऊपरी दोनों ऊंचाई पर उत्तर की ओर बढ़ता है तो उपमहाद्वीप में हवा का प्रवाह पूरी तरह उलट जाता है। जुलाई के मध्य तक, सतह के पास कम दबाव वाली बेल्ट [जिसे अंतर-उष्णकटिबंधीय अभिसरण क्षेत्र (आईटीसीजेड) के रूप में जाना जाता है] उत्तर की ओर स्थानांतरित हो गई थी, जो लगभग 20 और 25 उत्तरी अक्षांश के बीच हिमालय के समानांतर थी। इस समय पश्चिमी जेट स्ट्रीम भारतीय उपमहाद्वीप को छोड़ चुकी थी। भूमध्यरेखीय गर्त (आईटीसीजेड) का उत्तर की ओर खिसकना और उत्तर भारतीय मैदान से पश्चिमी जेट स्ट्रीम की वापसी आपस में जुड़ी हुई है। आईटीसीजेड एक कम दबाव वाला क्षेत्र है जो दक्षिणी गोलार्ध से समुद्री उष्णकटिबंधीय वायु द्रव्यमान को आकर्षित करता है, जो भूमध्य रेखा को पार करने के बाद आम तौर पर दक्षिण-पश्चिमी दिशा में कम दबाव वाले क्षेत्र की ओर बढ़ता है। इस आर्द्र वायु परिसंचरण का वर्णन करने के लिए दक्षिण पश्चिम मानसून शब्द का प्रयोग किया जाता है। क्षोभमंडल ही एकमात्र ऐसा स्थान है जहाँ दबाव और हवाएँ बनती हैं। जून में, एक पूर्वी जेट स्ट्रीम प्रायद्वीप के दक्षिणी सिरे से होकर गुजरती है। यह अगस्त में 15oN अक्षांश और सितंबर में 22oN अक्षांश तक सीमित है। ऊपरी वायुमंडल में, पूर्वी हवाएं आम तौर पर 30 उत्तरी अक्षांश के उत्तर में नहीं फैलती हैं।

पूर्वी जेट स्ट्रीम और उष्णकटिबंधीय चक्रवात

पूर्वी जेट स्ट्रीम द्वारा उष्णकटिबंधीय अवसादों को भारत में लाया जाता है। ये अवसाद पूरे भारतीय उपमहाद्वीप में मानसूनी वर्षा के वितरण को प्रभावित करते हैं। भारत में सर्वाधिक वर्षा वाले क्षेत्र इन्हीं अवदाबों के पथ हैं। जिस नियमितता के साथ ये अवसाद पूरे भारत में गुजरते हैं और उनकी दिशा और गंभीरता सभी दक्षिण पश्चिम मानसून के मौसम के दौरान वर्षा के पैटर्न को प्रभावित करती है।

जेट धाराएँ दो भागों में विभाजित हो गईं। इसकी एक शाखा उत्तर में तिब्बती उच्चभूमि तक पहुँचती है। हवा की दक्षिणी शाखा हिमालय के दक्षिण में पूर्व की ओर बहती है। फरवरी में, इसकी औसत स्थिति 25N और दबाव स्तर 200-300 एमबी है। माना जाता है कि जेट स्ट्रीम की यह दक्षिणी शाखा भारत के शीतकालीन मौसम पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालती है

पश्चिमी चक्रवाती विक्षोभ और उष्णकटिबंधीय चक्रवात

पश्चिमी जेट स्ट्रीम सर्दियों के महीनों के दौरान पश्चिम और उत्तर-पश्चिम से भारत में पश्चिमी चक्रवाती विक्षोभ लाती है। ये विक्षोभ भूमध्य सागर के ऊपर से शुरू होते हैं और पश्चिमी जेट स्ट्रीम द्वारा भारत में लाए जाते हैं। इन चक्रवातों के विक्षोभों का आगमन आमतौर पर प्रचलित रात के तापमान में वृद्धि से पहले होता है। हिंद महासागर और बंगाल की खाड़ी से उष्णकटिबंधीय चक्रवात। तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश और ओडिशा के तट जबरदस्त हवा की गति और भारी बारिश के साथ उष्णकटिबंधीय तूफान से प्रभावित हुए तेज़ हवा की गति और उनके साथ होने वाली भारी बारिश के कारण, इनमें से अधिकांश चक्रवात काफी विनाशकारी होते हैं। ■

सर्दियों के मौसम में जमीन से गर्म पानी क्यों निकलता है?

■ साहित्य मिश्रा

शहर की महिला- 'यार! सर्दियों के मौसम में पानी छूने का मन ही नहीं करता है। कई बार तो नहाने का भी मन नहीं करता है'। जब भी कपड़ा साफ करना हो, बर्तन साफ करना हो, घर में पोंछा लगाना हो, नहाना हो या फिर कोई और काम टंकी के पानी से करना हो तो पानी को गर्म करके ही उपयोग करना पड़ता है'। पानी इतना ठंड होता है कि सुबह-सुबह आंख धोने का भी मन नहीं करता है'।

गांव की महिला-'यार, सर्दियों में पानी को लेकर हमें ऐसी कोई समस्या नहीं है क्योंकि, हम हैंडपंप का इस्तेमाल करते हैं और जब भी सर्दियों में चापाकल का इस्तेमाल करते हैं, तो गर्म पानी ही निकलता है। जब भी चापाकल में पानी लेने जाते हैं, तो एक से दो बार चला देते हैं ताकि गर्म पानी निकल सके। इसलिए गांव में शहर जैसी टंकी की हमें ज़रूरत नहीं पड़ती हैं'।

जी हां, अक्सर आपने देखा होगा कि सर्दियों के मौसम में जब हैंडपंप से फ्रेश पानी निकालते हैं तो ठंडा पानी नहीं बल्कि गर्म पानी निकलता है। लेकिन, क्या आपने कभी इसपर विचार किया है कि सर्दियों के मौसम में जमीन से गर्म पानी क्यों निकलता है? शायद, आप सोच रहे होंगे कि ठंड के मौसम में तो जमीन से ठंडा पानी ही निकलेगा लेकिन, ऐसा नहीं है। ठंड के मौसम में जमीन से गर्म पानी निकलने के पीछे कई कारण है। आज इस लेख में हम आपको बताने जा रहे हैं कि ठंड के मौसम में जमीन से गर्म पानी क्यों निकलता है, तो आइए जानते हैं।

पानी का तापमान

जी हां, ठंड के मौसम में जमीन से गर्म पानी का निकलना और पानी का तापमान एक-दूसरे के पूरक है। धरती के अंदर जो पानी मौजूद रहता है उस पानी पर सर्दी का कोई भी असर नहीं पड़ता है। यानि एक तरह से जमीन के अंदर जो पानी मौजूद है उसपर बाहर के वातावरण का कोई भी प्रभाव नहीं पड़ता है, इसलिए ठंड के मौसम में भी जमीन से गर्म पानी निकालता है। एक अन्य कारण ये है कि सर्दियों के मौसम में शरीर का तापमान बहुत कम रहता है, जबकि जमीन के अंदर मौजूद पानी का तापमान बिल्कुल वैसा ही रहता है।

ठंड और गर्म क्यों लगता है पानी?

अब आप सवाल पूछेंगे कि फिर गर्मी के मौसम में ठंडा पानी क्यों निकलता है? इस सवाल के जवाब में ये तर्क है कि गर्मी के मौसम में बाहर का तापमान अधिक रहता है जबकि, जमीन के नीचे जो पानी मौजूद रहता है उसका तापमान बराबर रहता है जिसकी वजह से गर्मी के मौसम में जमीन से ठंडा पानी निकलता है। जब आप सर्दियों में चापाकल या मोटर चलाते है और पानी को छुते हैं तो गर्म लगता है क्योंकि, सर्दियों के मौसम में शरीर का तापमान कम होता है और गर्मी के मौसम में शरीर का तापमान अधिक होता है जिसके चलते पानी ठंडा और गर्म लगता है।

इस कारण भी ठंड में गर्म पानी निकलता है

कई लोगों का यह भी मानना है कि धरती के अंदर जो सतह मौजूद है वहां गर्म लावा मौजूद है। ऐसे में जब पानी लावा के ऊपर से निकलता है तो गर्म हो जाता है। कहता जाता है कि बिहार की कुछ जगहों पर हमेशा ही गर्म पानी निकलता है क्योंकि, उन जगहों पर सल्फ़र की खानें हैं जिसकी वजह से पानी गर्म रहता है और गर्म पानी ही निकलता है। कई लोगों का यह भी मनाना है कि देश से लेकर विदेशों में कई जगह, जमीन के नीचे ज्वालामुखी हैं और जब पानी इनके ऊपर से गुजरता है तो गर्म पानी नीकलता है। ■

उत्तर भारत में कड़ाके की ठंड क्यों?

■ निलेश कुमार

देश में ठंड का कहर बढ़ने लगा है। खासकर उत्तर भारत के राज्यों में पारा तेजी से लुढ़क रहा है। शीतलहर शुरू हो चुकी है। खासकर सुबह और रात में बर्फीली हवाएं हांड़ कंपा दे रहीं। दिल्ली में नवंबर में पारा लुढ़कने का रिकॉर्ड टूट चुका है। मौसम वैज्ञानिकों के मुताबिक, हर साल के मुताबिक इस साल ज्यादा ठंड पड़ने वाली है।

देश के अन्य हिस्सों की तुलना में उत्तर भारत में कड़ाके की सर्दी पड़ती है। उत्तर भारत में तेज शीतलहर के पीछे 'धरती का भूगोल' भी एक वजह बताई जाती है। भूगोल से यहां मतलब लेटीट्यूट यानी अक्षांश रेखीय इलाकों के नजदीक होने से है। दिल्ली की बात करें तो यह तीन पहाड़ी प्रदेशों जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड से काफी सटा हुआ है, जहां से चलने वाली बर्फीली हवाएं दिल्ली समेत पूरे उत्तर भारत को ठंड में डुबो देती हैं। ऐसा हर साल होता है। इस साल तो 15 नवंबर से ही हिमाचल, जम्मू और उत्तराखंड के कई जगहों पर बर्फबारी शुरू हो गई थी। वहीं पश्चिमी विक्षोभ के कारण भी उन इलाकों से ठंडी हवाएं आ रही हैं।

अक्षांश रेखा तय करता है, कैसी ठंड पड़ेगी!

धरती पर स्थित किसी स्थान की भौगोलिक स्थिति बताने के लिए उस स्थान के अक्षांश (latitude) और देशांतर (Longitude) का उपयोग किया जाता है। किसी भी देश या जगह की स्थिति का निर्धारण इसी से होता है। विशेषज्ञों के मुताबिक, अक्षांश रेखा का मौसम से गहरा संबंध होता है। यही तय करता है कि किसी भौगोलिक स्थान पर सूरज की कितनी रोशनी और ऊर्जा मिलेगी। हिमाचल, जम्मू, उत्तराखंड जैसे प्रदेशों में बर्फबारी आम है।

ठंड की एक बड़ी वजह ये भी

सर्दियों में सूरज का पृथ्वी से दूर हो जाना भी ठंड की बड़ी वजह है। धरती सूर्य के चारों ओर अपनी जिस कक्षा में चक्कर लगाती है, वह अंडाकार या परवलयाकार है। उसमें हर समय धरती और सूर्य के बीच की दूरी समान नहीं होती। सर्दियों में सूर्य धरती से अपेक्षाकृत दूर हो जाता है। इस कारण भी ठंड बढ़ती है।

पश्चिमी विक्षोभ के कारण आती हैं बर्फीली हवाएं

पश्चिमी विक्षोभ अपने साथ भूमध्यसागर और अटलांटिक महासागर से नमी लेकर आती है। भारत पहुंचते-पहुंचते इस तूफान की हवाएं बहुत ठंडी हो जाती हैं। ये हवाएं जब उत्तर भारत में हिमालय से टकराती हैं तो यहां ठंड में भी बारिश होती है। उत्तर भारत के कई राज्यों में जगह-जगह ओले और बर्फ भी गिरते हैं। ठंड बढ़ने के पीछे ये भी बड़ा कारण हैं।

मौसम विभाग दे चुका है चेतावनी

इस साल मौसम विभाग 'ला नीना' की वजह से ज्यादा ठंड की चेतावनी दे चुका है। ला नीना एक स्पेनिश शब्द है, जिसका मतलब है छोटी बच्ची। मेट्रोलॉजिकल भाषा में पूर्वी प्रशांत महासागर क्षेत्र के सतह पर निम्न हवा का दबाव होने पर पैदा हुई स्थिति को यह नाम दिया गया है। इस वजह से समुद्री सतह का तापमान काफी कम हो जाता है, जिसका सीधा असर दुनियाभर के तापमान पर पड़ता है। इंडियन एक्सप्रेस की एक रिपोर्ट के मुताबिक, मौसम विज्ञानी बताते हैं कि अगर तापमान सामान्य से 4 से 5 डिग्री सेल्सियस तक नीचे गिर जाए, तो इसे ठंड मानते हैं। वहीं अगर यह तापमान 6 से 7 डिग्री तक लुढ़क जाए तो इसका मतलब है कि कड़ाके की ठंड पड़ रही है। कुल मिलाकर उत्तर भारत में कड़ाके की ठंड पड़ने की ये बड़ी वजहे हैं। ■

जेबरा के बारे में जान लें सबकुछ

ज़ेबरा अफ़्रीका में पाया जाने वाला एक खूबसूरत जंगली जानवर है, जिसे उसके शरीर पर बने सफेद और काली धारियों से आसानी से पहचाना जा सकता है। आनुवंशिक रूप से, ज़ेबरा घोड़े और गधे का करीबी रिश्तेदार है। लेकिन इसे घोड़े और गधे की तरह पालतू नहीं बनाया जा सकता क्योंकि यह स्वभाव से आक्रामक होता है। पूर्वी और दक्षिणी अफ़्रीका में ज्यादातर जेबरा पाए जाते हैं। वे आम तौर पर वृक्षरहित घास के मैदानों और पेड़ों से आच्छादित सवाना में रहते हैं। लोगों के मन में यह सवाल हमेशा उठता है कि क्या ज़ेबरा का शरीर काले रंग का है और उस पर सफ़ेद धारियां हैं या ज़ेबरा का रंग सफ़ेद है और उस पर काली धारियां हैं।

■ **युगांतर प्रकृति नेटवर्क**

- पृथ्वी पर जेबरा का विकास लगभग 40 लाख वर्ष पूर्व हुआ था।
- जेबरा शब्द पुर्तगाली भाषा से लिया गया है जिसका अर्थ है जंगली गधा।
- वर्तमान समय में ज़ेबरा की तीन प्रजातियां जीवित हैंः मैदानी ज़ेबरा, शाही ज़ेबरा और पहाड़ी ज़ेबरा। मैदानी ज़ेबरा तीनों प्रजातियों में सबसे आम है।
- नैसर्गिक रूप से, ज़ेबरा का शरीर वास्तव में काला होता है, जिस पर सफेद धारियां बनी होती हैं।
- ज़ेबरा सामाजिक प्राणी हैं और वह समूहों में रहते हैं। जेबरा के समूह को डैजेल कहा जाता है जिसमे 5 से 20 जेबरा होते हैं।
- ज़ेबरा के झुंड में आमतौर पर एक प्रमुख नर, कई मादा ज़ेबरा और उनके बच्चे होते हैं। झुंड के प्रमुख नर को स्टॉलियन कहा जाता है। मादा ज़ेबरा को मेयर और उनके बछड़ो को फोल या कब कहते हैं।
- ज़ेबरा एकमात्र खुर वाला जानवर है जो अफ़्रीका का मूल निवासी है।
- पूरी दुनिया में लगभग 7,50,000 जेबरा मौजूद हैं।
- जंगल में जेबरा का जीवन काल 20 से 30 वर्ष होता है और वे चिड़ियाघरों या वन्यजीव संरक्षण में 40 वर्ष तक जीवित रहते हैं।
- जेबरा केवल 3.5 से 5 फीट लंबे होते हैं।
- एक वयस्क ज़ेबरा का वजन 400 किलोग्राम तक हो सकता है, लेकिन पहाड़ी ज़ेबरा का वजन केवल 280 किलोग्राम तक हो सकता है।
- जेबरा ज्यादातर घास खाते हैं और कभी-कभी वे पेड़ों की पत्तियों, झाड़ियों और छाल को भी खाते हैं।
- किसी भी दो जेबराओं को उनके शरीर पर बनी सफेद धारियों द्वारा पहचाना जा सकता है, क्योंकि उनके शरीर पर बनी सफेद धारियां भी मानव उंगलियों के निशान की तरह भिन्न होती हैं।
- ज़ेबरा अपने बच्चे को 2-3 दिनों के

काली-सफेद धारियों का मतलब

लिए अन्य सभी ज़ेबरा से दूर रखता है ताकि उसका बच्चा उसे बेहतर ढंग से पहचान सके।

- ज़ेबरा के शरीर पर बनी धारियां इसे शिकारियों से सुरक्षा देती हैं क्योंकि ज़ेबरा बड़े झुंडों में रहते हैं और एक ही स्थान पर बहुत सी धारियां आमतौर पर शिकारी को भ्रमित करती हैं।
- शुतुरमुर्ग जेबरा के साथ बहुत अच्छी तरह से घुलमिल जाता है। शिकारियों से एक-दूसरे की रक्षा करने के लिए दोनों अक्सर एक-साथ रहते हैं। शुतुरमुर्ग के पास बेहतर दृष्टि होती है, जबकि ज़ेबरा बेहतर सुन सकता है और उसकी नाक खतरे को बेहतर ढंग से सूंघ सकती है।
- ज़ेबरा और गधे के मेल से पैदा होने वाली संतान को जौंकी कहा जाता है।
- ज़ेबरा और घोड़े के मिलन से पैदा हुए बच्चे को जोर्स कहा जाता है, जो दिखने में घोड़े के समान ही होता है।
- जब ज़ेबरा पर हमला होता है, तो वह टेढ़े-मेढ़े तरीके से दौडता है। इस तरह वे भागकर शिकारियों को भी चकमा देते हैं।
- ज़ेबरा से जुड़ी कई प्रसिद्ध सांस्कृतिक और धार्मिक कहानियां मौजूद हैं।
- जेबरा दौड़ने में बहुत तेज होते हैं। वे 35 मील प्रति घंटे की गति से दौड़ सकते हैं लेकिन घोड़े उससे भी ज्यादा तेज दौड़ते हैं।
- जेबरा खड़े होकर सोते हैं। उन्हें लेटकर सोने की आदत नहीं होती।
- ज़ेबरा की दृष्टि और सुनने की क्षमता बहुत अच्छी होती है।
- ये जानवर हर दिशा में अपने कान मोड़ने में सक्षम होते हैं।
- आपको जानकर हैरानी होगी कि जेबरा के पैर में सिर्फ एक ही उंगली होती है।
- जेबरा नारंगी रंग देख पाने में सक्षम नहीं होते हैं।

जेबरा ज्यादातर घास खाते हैं और कभी-कभी वे पेड़ों की पत्तियों, झाड़ियों और छाल को भी खाते हैं।

- जेबरा कई तरह की आवाजें निकालने के अलावा इशारों में एक-दूसरे से संवाद भी करते हैं।
- उनकी त्वचा उन्हें % गर्मी से बचाती है।
- जेबरा को अफ्रीका के कई शहरों में पालतू बनाकर पाला जाता है।
- वे किसी भी परिस्थिति में अपने दुश्मन से बहुत बहादुरी से लड़ते हैं।
- ज़ेबरा के कानों को देखकर हम उसकी मनःस्थिति को समझ सकते हैं।
- गधे और ज़ेबरा एक दूसरे से बहुत मिलते-जुलते हैं लेकिन गधों की तरह हम ज़ेबरा को कुछ भी काम करना नहीं सिखा सकते।
- ज़ेबरा पानी के बिना जीवित नहीं रह सकते। उन्हें दिन में कम से कम एक बार पानी पीना ही पड़ता है।
- शेर और बाघ जैसे जंगली जानवरों से खुद को बचाने के लिए ज़ेबरा ज्यादातर झुंड में रहना पसंद करते हैं।
- दुनिया का सबसे बड़ा ज़ेबरा लगभग 350-450 किलो का है।

- यदि आप किसी ज़ेबरा पर हमला करते हैं, तो उसका झुंड तुरंत उसकी सहायता के लिए आएगा और घायल ज़ेबरा को घेर लेगा और आपको दूर भगाने की कोशिश करेगा।
- अमेरिका के चिड़ियाघरों में ज़ेबरा सुरक्षाकर्मियों को सबसे ज्यादा चोट पहुंचाने वाला जानवर है।
- मूल अमेरिकी संस्कृति ज़ेबरा को संतुलन और पथ की निश्चितता के प्रतीक के रूप में संदर्भित करती है।
- अमेरिकी राज्य टेक्सास में बड़े किसान ज़ेबरा और अन्य अफ्रीकी जानवरों से इतने तंग आ चुके हैं कि इनका शिकार करने के लिए वे हर साल हजारों डॉलर खर्च करते हैं।
- शहरी क्षेत्रों में सड़क पार करने के लिए सिग्नलों से सटी सड़कों पर काली और सफेद धारियां बनी होती हैं, जिन्हें जेबरा क्रॉसिंग कहा जाता है। उन्हें ज़ेबरा क्रॉसिंग नाम इसी कारण दिया गया है क्योंकि वे ज़ेबरा के शरीर पर बनी बड़ी काली और सफेद धारियों की तरह दिखते हैं। ■

जेबरा के शरीर पर बनी धारियां हमेशा से ही चर्चा का विषय रही हैं। हंगरी की यूनिवर्सिटी के हालिया शोध में इसका फायदा बताया गया है। शोध के मुताबिक, जेबरा के शरीर पर बनी काली-सफेद धारियां उसे खून चूसने वाली हॉर्सफ्लाई से बचाती हैं। वैज्ञानिकों का कहना है कि ये धारियां प्रकाश को परावर्तित करती हैं जिससे हॉसफ्लाई भ्रमित होती है और शिकार को देख नहीं पाती। हंगरी की इवोव्स लॉरेंड यूनिवर्सिटी में हुए शोध के अनुसार, जेबरा के बाद रिसर्च को और भी बेहतर तरीके से समझने के लिए इंसानी पुतलों पर भी ऐसी ही धारियां पेंट की गईं।

शोध में पाया गया कि हॉर्सफ्लाई सफेद पुतलों से दूर रहीं। वैज्ञानिकों के मुताबिक, सफेद के मुकाबले भूरे रंग के पुतले की ओर हॉउसफ्लाई 10 गुना ज्यादा ज्यादा आकर्षित हुईं। रॉयल सोसायटी पत्रिका में प्रकाशित शोध के अनुसार, जेबरा पर काले रंग की धारियों के कारण कीटों से फैलने वाली बीमारियों का खतरा काफी हद तक कम हो जाता है। कुछ आदिवासी भी शरीर को रंगते रहे हैं। माना जाता है कि वे कीटों से बचने के लिए ही ऐसा करते थे। हालांकि, स्तनधारियों में शरीर पर लकीरों का सबसे ज्यादा असर जेबरा पर दिखाई देता है। बॉडी पेंट करने वाले अफ्रीकी और ऑस्ट्रेलियाई लोगों से भी हॉर्सफ्लाई दूर रहती हैं। जेबरा के शरीर पर काली-सफेद धारियां क्यों होती हैं इसको लेकर वैज्ञानिकों ने अलग-अलग जवाब दिए हैं, लेकिन कोई भी जवाब इसकी पूरी तरह से पुष्टि नहीं करता। कुछ वैज्ञानिकों के मुताबिक, इन धारियों के आधार पर जेबरा एक-दूसरे को पहचानते हैं। कुछ का कहना है कि ये उनकी फिटनेस को दिखाता है। ■

मिलिए इन जहरीले सांपों से

कॉमन करैत हो या इंडियन कोबरा (नाग) या फिर किंग कोबरा या रसेल वाइपर... दुनिया के कुछ सबसे जहरीले सांप अपने देश भारत में पाए जाते हैं। एक नजर भारत के ऐसे सांपों पर, जो काट लें तो इंसान पानी तक नहीं मांगता...

■ युगांतर प्रकृति नेटवर्क

सांपों से इंसान का पाला अक्सर पड़ता रहता है। कभी जंगल-झाड़ियों में तो कभी कंक्रीट के घरों में, सांप दिख ही जाते हैं। विशेषज्ञों के अनुसार ज्यादातर सांप जहरीले नहीं होते मगर जो होते हैं, वे बहुत खतरनाक हैं। भारत में एक से एक जहरीले सांप मौजूद हैं जो डस लें तो कुछ मिनटों में मौत हो जाए। उत्तर प्रदेश के शाहजहांपुर में पिछले दिनों एक पूर्व प्रधान ऐसे ही सांप का शिकार हो गए। घर में सांप निकला था, इनको बचपन से सांप पकड़ने का शौक था। आसानी से पकड़ लिया और खेलने लगे। पकड़ ढीली हुई तो सांप ने डस लिया। जहर से उनकी मौत हो गई। हाल में सोशल मीडिया के लिए सांप पकड़ने के वीडियो बनाने का ट्रेंड भी चला है। बिना यह जाने कि खतरा कितना बड़ा है, सांपों से दूरी ही ठीक है। करैत, किंग कोबरा, रसेल वाइपर जैसे कई सांप हैं तो इतने जहरीले हैं कि डसते ही धड़कनें बंद होने लगती हैं।

किंग कोबरा

फन उठाकर खड़े किंग कोबरा को देखकर बड़े-बड़े दूर से ही भाग खड़े हों। यह दुनिया का सबसे लंबा जहरीला सांप है। इसकी लंबाई साढ़े 5 मीटर तक हो सकती है। यह जमीन से 2 मीटर ऊपर तक फन उठा सकता है। किंग कोबरा से बाकी सांप भी बचकर निकलते हैं क्योंकि यह उन्हें भी खा जाता है। किंग कोबरा की गिनती भारत ही नहीं, दुनिया के सबसे जहरीले सांपों में होती है। सबसे खतरनाक बात यह कि अपने शिकार को मारने के लिए किंग कोबरा को डसने की जरूरत नहीं। यह 2 मीटर दूर से ही जहर फेंककर शिकार को अंधा कर सकता है। आमतौर पर घने जंगलों, ठंडे दलदलों, बांस और रेनफॉरेस्ट्स में पाया जाता है। किंग कोबरा के जहर की काट मौजूद है मगर इसका एक दंश ही इंसान की मौत के लिए काफी है। किंग कोबरा के काटने के 30 मिनट के भीतर ऐंटी-वेनम न मिले तो मौत हो जाती है।

इंडियन करैत

करैत सांप गांवों और जंगलों में खूब निकलता है। देश में इंसानों को सबसे ज्यादा यही सांप काटता है। इसके जहर में ऐसे न्यूरोटॉक्सिन्स होते हैं कि शरीर काम करना बंद कर देता है। 45 मिनट के भीतर इंसान की मौत हो जाती है। दिक्कत ये है कि उत्तर भारतीय करैत के जहर की काट नहीं है। 6.5 फीट तक लंबाई रखने वाले करैत सांप 10-17 साल की उम्र तक जिंदा रहते हैं।

रसेल्स वाइपर

रसेल्स वाइपर भारत में हर जगह पाया जाता है। किसी और सांप के मुकाबले इसी ने सबसे ज्यादा भारतीयों की जान ली है। यह डंसने से पहले जोर से फुफकारता है। इसकी बाइट से एक हीमोटॉक्सिन रिलीज होता है जो सीधे सेंट्रल नर्वस सिस्टम को पंगु कर देता है। रसेल्स वाइपर काटे तो इंटरनल ब्लीडिंग होती है, तेज दर्द उठता है और दिमाग में हेमरेज हो जाता है। बिना ऐंटी-वेनम 45 मिनट के भीतर मौत हो जाती है। रसेल्स वाइपर रात में खूब सक्रिय रहता है जो इसे इंसानों के लिए और खतरनाक बनाता है।

सॉ-स्केल्ड वाइपर

देखने में तो सॉ-स्केल्डवाइपर बेहद छोटा होता है, मगर जहरीला बहुत है। इसकी बड़ी-बड़ी आंखें, गर्दन से चौड़ा सिर बाकी सांपों से अलग बनाते हैं। आमतौर पर रेतीले, चट्टानी और नर्म मिट्टी वाले इलाकों में पाया जाने वाला यह सांप 2.6 फीट से ज्यादा लंबा नहीं होता। यह भारत के चार सबसे जहरीले सांपों में सबसे छोटा होता है। दुनिया में सबसे ज्यादा इसी सांप के काटने से लोग मरते हैं। इसका ऐंटी-वेनम उपलब्ध है, इसके बावजूद मृत्यु-दर 20% है यानी हर पांच में से एक शिकार की मौत हो जाती है।

दुनिया के 5 सबसे खूबसूरत पक्षी

इस दुनिया में सबसे सुंदर पक्षी कौन सा है? ये सवाल तो आपके मन में जरूर उठता होगा और शायद ही कोई ऐसा हो जो इस प्रश्न का उत्तर नहीं दे पाए क्योंकि, इस दुनिया में सभी पक्षी सुंदर हैं। हालांकि, कुछ प्रजातियों में अलग विशेषताएं हैं जो उन्हें अन्य पक्षियों से अलग करती हैं। आज हम जानेंगे दुनिया के उन कुछ पक्षियों को जिनकी सुंदरता अद्भुत तथा अलग है और जो अपनी विशेषताओं और रंगीन बनावट के लिए विश्व प्रसिद्ध हैं। ये पक्षी इतने सुन्दर हैं कि इनके बारे में जानने के बाद आपका मन करेगा की जीवन में इन्हें एक बार जरूर देखें।

मोर

मोर भारत का राष्ट्रीय पक्षी है और इसके शानदार पंख इसे दुनिया का सबसे सुंदर पक्षी बनाते हैं। विश्व में जितनी भी पक्षियों की प्रजातियां हैं इसमें सबसे बड़े पंख मोर के ही हैं। दुनिया में तीन तरह के मोर पाए जाते हैं- भारतीय (Indian peafowl), कांगो और हरा मोर। मोर की लंबाई 5 फीट तक हो सकती है, जो इसे दुनिया के सबसे बड़े उड़ने वाले पक्षियों में से एक बनाती है।

फ्लेमिंगो

फ्लेमिंगो या राजहंस को विश्व की सबसे खूबसूरत पक्षियों में गिना जाता है। इसके लंबे पैर और नारंगी व क्रीम कलर के रंग और इसकी ऊंची गर्दन उसकी खूबसूरती को और भी सुंदर बना देती है। विश्व में इसकी कई प्रजातियां पाई जाती हैं। राजहंस या फ्लेमिंगो 3 से 4 घंटे एक पैर पर खड़े रह सकते हैं और यह इसी मुद्रा में अपनी नींद भी पूरी कर सकते हैं इनकी लाल आंखें बहुत ही सुंदर व खतरनाक दिखाई देती हैं।

कील-बिल्ड टूकेन

कील-बिल्ड टूकेन दुनिया में सबसे सुंदर चोंच वाले पक्षियों में से एक है। इसकी लम्बी चोंच के कारण ही यह दुनिया की सबसे खूबसूरत पक्षियों की सूची मे शामिल है। यह बेलीज (Belize) का राष्ट्रीय पक्षी है। कील-बिल वाले टौकेन (Keel-billed toucan) अपने भारी पंखों के कारण उड़ने मे ज्यादा अच्छे नहीं होते। वे केवल कूदकर पेड़ की शाखाओं के बीच जा सकते हैं।

लाल तोता

लाल तोता को विश्व का सबसे सुंदर तोता कहा जाता है और इसका लाल रंग इसकी खूबसूरती अत्यधिक निखार देती हैं। इस तोते की चोंच भी दूसरे तोते के मुकाबले ज्यादा ताकतवर होती है, इसका अंदाजा आप इस बात से लगा सकते हैं कि ये अपनी चोच से नारियल तक तोड़ सकता है।

इंद्रधनुष लोरिकेट

इंद्रधनुष लोरिकेट को इस पृथ्वी के सबसे खूबसूरत पक्षियों में से एक माना जाता है, इंद्रधनुष लोरिकेट ऑस्ट्रेलिया में पाए जाने वाले तोते की एक प्रजाति है। यह उत्तरी क्वींसलैंड से दक्षिण ऑस्ट्रेलिया तक पूर्वी समुद्री तट के किनारे रहते हैं। इसका निवास स्थान वर्षावन, तटीय झाड़ी और वुडलैंड क्षेत्र हैं।

मिलिए चिड़ियों की दुनिया के डॉन से

क्या आपने चिड़ियों के दुनिया के माफिया को देखा है? ये माफिया आपके घर के आसपास हमेशा नजर आ जायेंगे। इनके कारनामे ही ऐसे हैं ...

दुनिया में कई तरह के जीव-जंतु मौजूद हैं। भगवान ने हर जीव को कुछ खासियत के साथ भेजा है। ये क्वालिटीज इनके सर्वाइवल में काफी मदद करते हैं। लेकिन कुछ जीव अपने सर्वाइवल के लिए दूसरों को मार डालते हैं। वैसे तो ये कारनामा पक्षी अपने दुश्मनों के साथ करते हैं लेकिन जिस पक्षी के बारे में हम बात कर रहे हैं, वो अपने ही भाई-बहन को मार डालते हैं। हम बात कर रहे हैं कुक्कू यानी कोयल की। कोयल को पक्षियों की दुनिया का माफिया कहा जाता है। एक सर्वे में पाया गया कि कोयल अपने अंडे दूसरे पक्षियों के घोसले में देते हैं। इसमें मैगपाई और कौए के घोंसले कोयल की पहली पसंद होते हैं।

कुक्कू यानी कोयल। पक्षियों की दुनिया में कोयल को माफिया माना जाता है....

लेकिन क्या आप जानते हैं कि कोयल के बच्चे जैसे ही अंडे से बाहर आते हैं, वो बाकी के अंडों को नीचे फेंक देते हैं। सोशल मीडिया पर कोयल के बच्चे द्वारा दूसरे अंडों को नीचे फेंकने का वीडियो शेयर किया गया।

इसमें देखा गया कि जैसे ही बच्चा बाहर निकला, उसने घोंसले में मौजूद बाकी के अंडे नीचे फेंक दिए। इस वीडियो को सोशल मीडिया पर जैसे ही शेयर किया गया, ये वायरल हो गया। लोगों ने इस वीडियो में दिख रहे पक्षी को आज के जमाने का माफिया बताया। वहीं कई ने इसे दुनिया का सबसे स्वार्थी पक्षी बताया। ■

अबुआ आवास
किसान पाठशाला मुख्यमंत्री रोजगार सृजन
कृषि ऋण माफी बिरसा हरित ग्राम
सावित्रीबाई फुले किशोरी समृद्धि
ग्रामीण सड़क सुदृढ़ीकरण
सोना सोबरन धोती साड़ी
साइकिल वितरण
सरना आदिवासी धर्म कोड
100 यूनिट मुफ्त बिजली
बिरसा सिंचाई कूप
JSSC नियुक्तियां
JPSC नियुक्तियां
मुख्यमंत्री पशुधन
प्री एवं पोस्ट मैट्रिक छात्रवृत्ति
गुरुजी स्टूडेंट क्रेडिट कार्ड
1932 खतियान
ओबीसी-27%, एसटी-28%, एससी-12% आरक्षण
मरङ गोमके पारदेशीय छात्रवृत्ति
हरा राशन कार्ड
आपकी योजना आपकी सरकार आपके द्वार
फूलो झानो आशीर्वाद
अबुआ बीर अबुआ दिशोम
महिला सशक्तिकरण
CM उत्कृष्ट विद्यालय
निजी क्षेत्र में 75% आरक्षण
सर्वजन पेंशन
मुख्यमंत्री ग्राम गाड़ी

जोहार 4 वर्ष युवा झारखण्ड के बढ़ते कदम...

कार्यक्रम

दिनांक : 29 दिसंबर, 2023

समय : अपराह्न 1 बजे से

स्थान : मोरहाबादी मैदान, रांची

हेमन्त सोरेन
मुख्यमंत्री, झारखण्ड

सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, झारखण्ड सरकार

युगांतर न्यूज
एक ऐसा न्यूज पोर्टल जिसमें आपको मिलेंगी
राजनीति, हेल्थ और पर्यावरण की खबरें
www.yugantarnews.in पर पढ़ें
हमारा YouTube Channel देखें yugantarnews

With Best Compliments From
दामोदर बचाओ आंदोलन